इकाई 6 कक्षागत भाषा और साक्षरता

इकाई की रूपरेखा

6.0 प्रस्तावना

6.1 उद्देश्य

6.2 उदीयमान साक्षरता के कुछ महत्वपूर्ण घटक

- 6.2.1 मौखिक भाषा और वर्णनात्मक कौशल
- 6.2.2 शब्द भंडार
- 6.2.3 ध्वनि–विषयक जागरूकता और ध्वनि–विज्ञान साक्षरता
- 6.2.4 सहभागी पठन
- 6.2.5 अक्षर ज्ञान और मुद्रण अभिप्रेरणा
- 6.2.6 निर्मित वर्तनी
- 6.2.7 अंक ज्ञान

6.3 बच्चे की साक्षरता में मातापिता की भूमिका

6.4 साक्षरता विकास में अध्यापक की भूमिका

6.5 कम साक्षर बच्चों के लिए प्रयास

6.6 भाषा विकास और श्रवण कौशल

6.7 भाषा विकास और वाचन कौशल

6.8 भाषा विकास और पठन कौशल

6.9 भाषा विकास और लेखन कौशल

- 6.9.1 लेखन की क्रियाविधि

6.10 सारांश

6.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

6.12 अन्य उपयोगी पुस्तकें

6.0 प्रस्तावना

बच्चे उस दिन से ही सीखना प्रारंभ करते हैं जिस दिन से वह जन्म लेते हैं। अपनी देखभाल करने वाले से अंतःक्रिया करते हुए वे अपना अल्पविकसित शब्द भंडार और भाषा विकसित कर लेते हैं और जैसे–जैसे वे बड़े होते हैं, भाषा में लगातार जटिलता प्राप्त करते हैं।

बच्चे अपनी मौखिक भाषा में धारा प्रवाह लाते हुए और अपने चारों तरफ उपलब्ध मुद्रित सामग्री के प्रति समझ बढ़ाते हुए, पढ़ने और लिखने (उदीयमान साक्षरता) के लिए अपनी तैयारी करते हैं। यदि विद्यार्थी को साक्षरता सम्पन्न परिवेश दिया जाता है तो उदीयमान साक्षरता कौशल तेजी से विकसित होते हैं।

साक्षरता सम्पन्न परिवेश वह है जिसमें बच्चे भाषा और इसके विभिन्न रूपों से परिचित होते हैं, जैसे कि परिवेश में उपलब्ध चिह्न और प्रतीक, पुस्तकें और खिलौने, वयस्कों से

अंतःक्रिया, कहानियाँ, गीत, रुचिकर वार्ता और मुद्रित संदेश। बच्चे शीघ्र ही अपने विचारों और भावनाओं को भाषा के माध्यम से प्रकट करना सीख लेते हैं। ये शीघ्र ही यह समझना भी प्रारंभ करते हैं कि उनके चारों तरफ जो मुद्रित सामग्री है वह अर्थपूर्ण है और उनके जीवन में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका है। मुद्रित माध्यम के विभिन्न रूपों जैसे पुस्तकें, पत्रपत्रिकाएँ, खेल और खिलौनें, संकेत और प्रतीकों से अंतःक्रिया से मुद्रित सामग्री के प्रति स्वीकृति और समझ बढ़ जाती है जो कि पठन का मूल उपकरण है।

वयस्कों से बातें करते और सुनते हुए या जब वयस्क स्नेह और देखरेख करने वाले परिवेश में पुस्तकें पढ़ते हैं तो बच्चे अपने स्वयं का विशाल शब्द भंडार और वर्णनात्मक कौशल विकसित करते हैं, जिसका प्रयोग वे "अभिनय खेल" या "पढ़ने के अभिनय" के दौरान करते हैं, जब वे खेलों में स्थितियों का अनुकरण करते हैं या पुस्तक या कहानी पढ़ने का अभिनय करते हैं, जिसे वे अच्छी तरह से जानते हैं। जब बच्चे पुस्तक पकड़ना सीखते हैं और यह सीखते हैं कि हम सब भाषा के अनुसार बाई से दाई (या दाई से बाई या शीर्ष से नीचे) पढ़ते हैं और अगला पृष्ठ पलटते हैं, वे परंपरागत दृष्टि से पढ़ने के लिए तैयार हैं।

पठन में (पढ़ने का अभिनय) या लिखने के बच्चे के अपरंपरागत प्रयासों को साक्षरता की उचित शुरुआत के रूप में देखा जाता है। उदीयमान विद्यार्थी विद्यालय में प्रवेश करता है और शीघ्र ही परंपरागत दृष्टि से पढ़ने और लिखने का कौशल सीखता है। जब बच्चे को औपचारिक निर्देशों की पहचान कराई जाती है तब उनके प्रारंभिक बाल्यावस्था के अनुभव सीखने में एक निर्णायक भूमिका अदा करते हैं।

विद्यालय में, बच्चे को पहली बार एक भिन्न ढंग और संरचना का अनुसरण करते हुए भाषा सिखाई जाती है। बहुधा द्वितीय भाषा भी आरंभ की जाती है।

इस इकाई में हम उदीयमान साक्षरता के विषय में चर्चा करेंगे; हम प्राथमिक स्तर पर वाचन, श्रवण, पठन और लेखन (LSRW) के चार कौशलों पर भी चर्चा करेंगे।

6.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरान्त आपः

- उदीयमान साक्षरता के घटक गिना सकेंगे;
- संकेन्द्रित कार्यकलापों के माध्यम से बच्चों का साक्षरता कौशल बनाए रख सकेंगे;
- बच्चों का साक्षरता कौशल विकसित करने में माता–पिता का मार्गदर्शन और सहायता कर सकेंगे;
- प्राथमिक विद्यालय के स्तर पर वाचन, श्रवण, पठन और लेखन (LSRW) के लिए अपेक्षित महत्वपूर्ण घटक कौशलों की पहचान कर सकेंगे; और
- उन कक्षागत विधियों का प्रयोग कर सकेंगे जो बच्चों के वाचन, श्रवण, पठन और लेखन (LSRW) को विकसित करने में सहायता कर सकेंगे।

6.2 उदीयमान साक्षरता के कुछ महत्वपूर्ण घटक

सीखने, पढ़ने और लिखने की शुरुआत के पीछे मुख्य आधार भाषा विकास है। जो बच्चा अच्छी तरह से विकसित भाषा (गृह भाषा) सीखकर विद्यालय में आता है वह पठन और लेखन के लिए अधिक तैयार होता है और परिणामस्वरूप उसमें अधिगम और संकल्पनाओं

का भंडार बढ़ जाता है। यद्यपि बच्चे के इस प्रकार के विकास में कई शक्तियाँ और पहलू बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, परंतु कुछ ऐसे बुनियादी कौशल हैं जिन्हें बच्चे एक समृद्ध साक्षरता परिवेश से ग्रहण करते हैं।

विद्यालय–पूर्व बच्चों को पठन के प्रति तत्पर बनाने वाले बुनियादी कौशल निम्न प्रकार हैः

क) मौखिक संप्रेषण और वर्णनात्मक कौशल

ख) शब्द भंडार

ग) ध्वनि–विषय जागरूकता और ध्वनि–विज्ञान साक्षरता

घ) सहभागी पठन

ङ) अक्षर ज्ञान और मुद्रण अभिप्रेरणा

च) निर्मित वर्तनी

छ) अंक ज्ञान

हम इनमें से प्रत्येक पर विचार करेंगे और देखेंगे कि यह बच्चों की पठन और अधिगम तत्परता के लिए किस प्रकार योगदान करते हैं।

6.2.1 मौखिक भाषा और वर्णनात्मक कौशल

बच्चा अपने चारों तरफ की वस्तुएँ देखता है और आत्मसात करता है तथा अपने चारों तरफ के परिवेश से भाव बनाने का प्रयास करता है। साक्षर और शहरी घर जो भिन्न–भिन्न मौखिक रूपों में भाषा से समृद्ध हैं उनमें बच्चा समृद्ध शब्द भंडार विकसित करता है और भाषा का व्याकरण अर्जित करता है। इसे प्राप्त करने के लिए माता–पिता को लगातार बच्चे से बातचीत करनी आवश्यक है, (अच्छी तरह से बातचीत करने के बारे में आप इकाई 1 में पढ़ चुके हैं) हमें इस पर बात करनी चाहिए कि वे क्या कर रहे हैं और परिस्थिति के अनुरूप शब्दों और वाक्यों को दोहराना चाहिए। माता–पिता घर में और घर के बाहर छोटी–सी सैर के समय चारों तरफ की वस्तुओं, लोगों, संकेतों और प्रतीकों, मुद्रित सामग्री की ओर इशारा करते हुए उनके बारे में बातचीत करके बच्चे की शब्द भंडार बढ़ाने में सहायता कर सकते हैं।

कहानी सुनाने, गीत गाने, लयबद्ध गान और भाषा की ध्वनियों से खेलने की परंपरा बच्चे की मौखिक भाषा विकसित बहुत महत्वपूर्ण साबित होती है। बच्चे अपनी स्वयं की भाषा तथा यह भाषा कैसे कार्य करती हैं, इसके बारे में समझते हैं। वे धीरे–धीरे व्याकरण को आत्मसात करते हैं और शब्दों की लय–ताल की पहचान कर लेते हैं। जैसे–जैसे वे बढ़े होते हैं, वे अपने खिलौने के इर्द–गिर्द कहानी बनाते हैं या अपने स्वच्छंद खेल में वयस्कों की भूमिका का अभिनय करना प्रारंभ करते हैं। यह सब उनकी मौखिक भाषा और वर्णनात्मक कौशल को परिष्कृत करता है। केवल यह ही नहीं, यदि माता–पिता और बच्चे कहानी पढ़े जाने के बाद उसके पात्रों पर चर्चा करते हैं तो बच्चों को इस विश्व के बारे में समझ बनाने में सहायता मिलती है, साथ ही वे जीवन और रहन–सहन के विभिन्न पहलू समझते हैं। यहाँ तक कि रुचिकर तरीके में ध्वनियों का खेल भी ध्वनियों की उनकी समझ विकसित करने में सहायता करता है और यह मौखिक भाषा ध्वनियों की लड़ियों से बनाई जाती हैं और जब इन ध्वनियों को भिन्न–भिन्न तरीके में एक साथ रखा जाता है तो उनका भिन्न अर्थ होता है।

पियाजे ने कहा है कि बच्चों में सम्प्रेषण करने की स्वाभाविक इच्छा होती है। ऐसा परिवेश, जहाँ माता–पिता या अभिभावक उन्हें सुनने के लिए तत्पर हैं, बातचीत में सम्मिलित होते हैं और बच्चों के प्रश्नों के उत्तर देते हैं, मौखिक सम्प्रेषण और वर्णनात्मक कौशल के विकास के अनुकूल हैं। जैसे–जैसे बच्चे बड़े होते हैं, ये परिष्कृत और जटिल होते जाते हैं। मौखिक और ज्ञानात्मक कौशल का विकास साथ–साथ होता है और यह अंतःसम्बद्ध है। जब बच्चे ऐसी कहानियाँ सुनते हैं जिनमें बहुत सी वार्ताएँ और संवाद होते हैं, तो पहले वे मुद्रित सामग्री को मौखिक भाषा का विस्तार और प्रतिरूप की मानते हैं। बाद में वे लिखित भाषा और मौखिक भाषा के बीच अंतर पर ध्यान देना प्रारंभ करते हैं और जिस पाठ्यांश को पढ़ते हैं या पढ़ने वाले हैं, उसमें लिखित भाषा की समझ विकसित करते हैं।

6.2.2 शब्द भंडार

शब्द भंडार व्यक्ति की भाषा का अभिन्न अंग है। इस अनुभाग में हम देखेंगे कि माता–पिता समृद्ध शब्द भंडार विकसित करने के लिए अपने बच्चों की सहायता कैसे करते हैं।

हम पहले ही चर्चा कर चुके हैं कि माता–पिता और अभिभावक बच्चों की मौखिक सम्प्रेषणात्मक कौशल विकसित करने के लिए किस प्रकार सहायता करते हैं। जब माता–पिता बच्चों के चारों तरफ की वस्तुओं का उल्लेख करते हैं, उनका नाम बताते हैं और उनके बारे में बाते करते हैं तो बच्चों का शब्द भंडार अधिक समृद्ध होता है। इससे बच्चा वस्तुओं के नाम, कार्य या विशेषताएँ रुचिकर तरीके से सीख सकता है, इसलिए प्रतिबिम्ब और चित्र दिखाना महत्वपूर्ण है।

माता–पिता बच्चे के लिए ऊँचे स्वर में पढ़ते हैं, यह विभिन्न विषयों के बारे में पृष्ठभूमि ज्ञान विकसित करने और उनका शब्द भंडार बढ़ाने में सहायक होता है। यह बाद में बच्चे द्वारा पढ़ने और पढ़ने की युक्तियों में प्रयोग किए जा सकते हैं। बच्चे कहानियों में प्रयुक्त लिखित भाषा के समृद्ध भाषा स्वरूप से भी परिचित हो जाते हैं। बच्चा शीघ्र ही पुनरावृत्ति शब्द और वाक्यांश सीख जाता है।

गीत और लय भी शब्द सीखने के लिए अच्छा तरीका है, विशेषकर तब, जब यह संगीत और भाव–भंगिमा के साथ हो। जैसा कि पहले चर्चा की गई है; माता–पिता या अभिभावक बच्चे की देखभाल करते–करते उसे विभिन्न वस्तुओं के नाम सिखा सकते हैं। उदाहरण के लिए, बच्चे को खिलाते समय माता–पिता शब्दों/वाक्यांशों जैसे अच्छा, गर्म, चम्मच, मीठा आम, अमित सेब पसंद करता है, अपना मुँह खोलो, अपना चेहरा पोछों, जल्दी से अपना दूध खत्म करो, स्वादिष्ट खीर आदि इत्यादि सिखा सकते हैं।

शब्दावली, घर के वातावरण को मुद्रित सामग्री समृद्ध बनाकर और बच्चे को बाहर की छोटी–सी सैर के लिए ले जाकर, उसे अपने चारों तरफ की वस्तुओं तथा लोगों को दिखाकर तथा उनके बारे में बताकर, बच्चे का ध्यान मुद्रित संकेतों और संदेशों की ओर आकर्षित कर बढ़ाई जा सकती है। जब बच्चे अपने चारों ओर के भिन्न–भिन्न प्रकार के संकेतों और निशानों का प्रयोग करते हुए अर्थ निकालते हैं तब वे शब्द सीखते हैं।

सामाजिक अंतःक्रिया भी जानकारी विकसित करने और शब्द भंडार बढ़ाने में सहायता करती है।

6.2.3 ध्वनि–विषय जागरूकता और ध्वनि–विज्ञान साक्षरता

जैसे ही बच्चे का भाषा कौशल विकसित होता है, उसे ज्ञात हो जाता है कि बोले जाने वाले शब्द अलग–अलग ध्वनियों से बनाए जाते हैं। ध्वनियों का प्रयोग करने और नया शब्द प्राप्त

करने के लिए एक ध्वनि को दूसरे से प्रतिस्थापित कर या लययुक्त खेलों का प्रयोग कर बच्चा सम्प्रेषण में ध्वनियों की भूमिका से परिचित हो जाता है। कुछ ध्वनि–विषयक जागरूकता अपने आप विकसित हो जाती है और कुछ के लिए बच्चों को माता–पिता या अभिभावक द्वारा कुछ ऐसे शब्दों के उदाहरण देने की आवश्यकता होती है जिनकी समान ध्वनियाँ हों और जो ऐसी वस्तुओं या क्रियाओं के नाम हैं, जिन्हे बच्चे जानते हैं।

जैसे ही बच्चों की साक्षरता विकसित होती है, वे ध्वनि–विज्ञान कौशल की कई श्रेणियों से परिचित होते हैं। वे लययुक्त शब्दों को सोचना या लययुक्त शब्दों की पहचान करना प्रारंभ करते हैं।

बाद की अवस्था में वे ध्वनियों का सम्मिश्रण करते हैं और नए शब्द या ध्वनि बनाते हैं जैसे /e/ और /i/ (/ei/) /e/ और /m// (/em/) या /e/ और /t/ (/et/) बाद में वे आगे सम्मिश्रण बनाने के लिए ध्वनियों को प्रतिस्थापित करते हैं। धीरे–धीरे वे अधिक शब्दों को स्वनों (phonemy) में तोड़ने के कठिन कार्य की ओर अग्रसर होते हैं और देखते हैं कि इपद शब्द /b/ /i/ और /n/ से बना हुआ है। यह स्वनों की अदला–बदली कर (bat-mat-map-cap-bat) नए शब्द बनाते हैं।

स्वनों की यह समझ उन्हें ध्वनि ज्ञान का प्रयोग कर नए शब्दों का उच्चारण करने में मदद करती हैं। जैसे ही वे पढ़ना प्रारंभ करते हैं, वे लिखित शब्दों और उनका अर्थ निकालना सीख जाते हैं।

6.2.4 सहभागी पठन

बच्चों के लिए ऊँचे स्वर से पढ़ना और उनसे कहानी सुनना या उसके पात्रों के बारे में चर्चा करना अत्यधिक महत्वपूर्ण है। "पठन में अपेक्षित सफलता के लिए, ज्ञान निर्माण का सबसे महत्वपूर्ण कार्य बच्चों के लिए ऊँचे स्वर में पढ़ना है। विशेष रूप से यह पूर्व–विद्यालय वर्षों में होना चाहिए।" (पृष्ठ 23, एण्डर्सन हाइवर्ट, स्कॉट और विल्किंसन (1985)।

माता–पिता बच्चे के साथ बैठते हैं, बड़े चित्रों वाली पुस्तक से ऊँचे स्वर से पढ़ते हैं और चित्रों की सहायता से कहानी बच्चों को समझने देते हैं। सबसे पहले बच्चा चित्रों और पाठक के स्वर शैली की सहायता से कहानी समझने का भरसक प्रयास करता है। बच्चे जो कुछ सुनते हैं उसका अर्थ निकालने के लिए भिन्न–भिन्न संकेतों और इशारों का प्रयोग करते हैं।

पढ़ते समय माता–पिता विभिन्न प्रतिबिम्बों और चित्रों का उल्लेख करते हैं जो बच्चों को नई शब्दावली समझने के लिए सहायता करते हैं। माता–पिता उन शब्दों का भी उल्लेख करते हैं, जिन्हें वे पढ़ते हैं। पुनरावृत्ति पाठ वाली पुस्तकों में बच्चा शीघ्र ही कुछ शब्दों को पहचानना सीख जाता है और कहानी कहने में प्रयोग करता है। कहानी को पुनः पढ़ने से भी बच्चा कहानी की विशेष अवधारणाओं से परिचित होने में समर्थ होता है। सहभागी पठन से बच्चा पुस्तकों और अन्य मुद्रित सामग्री के भिन्न–भिन्न पहलुओं से भी परिचित होता है। बच्चे दाएँ से बाएँ और ऊपर से नीचे पढ़ना सीखते हैं और इस प्रकार यह जानते हैं कि उन्हें पृष्ठ कब पलटना है। धीरे–धीरे माता–पिता बच्चे को पुस्तक पकड़ने व पृष्ठ पलटने देते हैं। यह बच्चों में पढ़ने के प्रति सकारात्मक मनोवृत्ति और मुद्रित सामग्री के बारे में जागरूकता उत्पन्न करता है।

इसके साथ ही बच्चे कहानी के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा द्वारा भी संसार और मानव संबंधों की पृष्ठभूमि का ज्ञान और समझ को विकसित करते हैं। यह चिंतन को बढ़ावा देता है। इस प्रकार ऊँचे स्वर से पढ़ने से बच्चे चारों क्षेत्रों में विकास करते हैं, अर्थात–मौखिक

भाषा, संज्ञानात्मक कौशल एवं मुद्रण और ध्वनि–विषयक जागरूकता की संकल्पना। जो औपचारिक पठन अनुदेशन के लिए महत्वपूर्ण है। बच्चों के लिए ऊँचे स्वर से पढ़ना उनका शब्द भंडार विकसित करने में सहायता करता है और जो उन्हें बाद में पढ़कर समझने में सहायता करेगा। ऊँचे स्वर में पढ़ी जा रही कहानियाँ सुनने और मुद्रित सामग्री देखने से बच्चों को भाषा के विविध रूपों से परिचित होने में तथा लिखित भाषा को समझने में सहायता मिलती है।

कहानी सुनाने के समय में विविध प्रकार की पठन सामग्री जैसे पुस्तकें, पत्रपत्रिकाएँ, वर्णमाला–पुस्तकें, कविताओं की पुस्तकें, समाचारपत्र और विभिन्न प्रकार के चित्रों वाली पुस्तकें भी शामिल कर सकते हैं। इनकी सुलभता बच्चों के भावी पाठक होने में उनकी सहायता करती है जिससे वे आसानी से परंपरागत पाठक बन सकें।

6.2.5 अक्षर ज्ञान और मुद्रण अभिप्रेरणा

साक्षरता सम्पन्न परिवेश में बच्चे मुद्रित सामग्री के भिन्न–भिन्न उदाहरणों से परिचित होते हैं जो पुस्तकें, पत्र–पत्रिकाएँ, चित्र, पोस्टर, सूचक (लेबल), निर्देश, नामपट्ट, संकेत और प्रतीक हो सकते हैं। पाठ्यांश से बार–बार सामना होने से बच्चा धीरे–धीरे अक्षरों की संकल्पना विकसित करता है और उस अक्षर को भाषा की ध्वनियों से समझना प्रारंभ करता है। इस प्रकार ध्वनि–विषयक जागरूकता बच्चों को अक्षरों की आकृति समझने में समर्थ बनाती है जिससे वह शब्दों को बनाने के लिए अक्षरों का संयोजन और बाद में शब्दों को तोड़ सकता है।

ध्वनि–विषयक जागरूकता बच्चे को वर्णमाला के सिद्धांत और उन नियमित तरीकों से समझने में सहायता करती है जिनसे अक्षर, ध्वनियों को निरूपित करते हैं।

कहानी पठन सत्रों या पाठ्यांश से सामना होने के अन्य अवसरों में मुद्रित पाठ्यांश के प्रदर्शन द्वारा बच्चे यह समझना प्रारंभ करते हैं कि पठन और लेखन का अभिव्यक्तिशील उद्देश्य होता है जैसे निर्देश और संकेत पढ़ना, अक्षर तथा ई–मेल पढ़ना, पाक–विधि पढ़ना, पुस्तिकाओं में अनुदेश पढ़ना, उत्पादों पर सूचना पढ़ना आदि।

अर्थपूर्ण मुद्रित सामग्री का प्रयोग उन्हें सकारात्मक रूप से इसके प्रति आकर्षित करता है। वे पुस्तकों में रुचि लेते हैं और कहानियों के बारे में बाते करते हैं तथा अपने पृष्ठभूमि ज्ञान को नई जानकारी से जोड़ते हैं। बच्चा यह समझना प्रारंभ करता है कि मुद्रित सामग्री के माध्यम से ही हम कहानियाँ और कविताएँ पढ़ सकते हैं।

संक्षेप में, विद्यालय–पूर्व बच्चे मुद्रित भाषा के बारे में काफी जानते हैं और संकेतों, प्रतीकों, लोगो (Logo) तथा सूचकों की पहचान कर सकते हैं, वे यह अच्छी तरह जानते हैं कि इन सभी का हमारे जीवन से सीधा संबंध है। उन्होंने यह भी सीखा है कि शब्दों को ध्वनियों और अक्षरों में विखंडित किया जा सकता है जो अक्षरों द्वारा निरूपित किए जाते हैं।

बच्चे जब विद्यालय में प्रवेश करते हैं, तो वे मुद्रित सामग्री के बारे में निम्नलिखित बातें सीख चुके होते हैं:

- मुद्रित सामग्री संदेश संप्रेषित करती है, चाहे कहानी में हो या मार्ग संकेत पर हो।
- मुद्रित सामग्री विश्व से संबंधित है;
- पुस्तकें, आवरण, शीर्षक और लेखक से सुसज्जित होती हैं और पठन एक विशिष्ट और निश्चित दिशा में प्रवाहित होता है।

- मुद्रित सामग्री और चित्रकला भिन्न–भिन्न हैं।
- मुद्रण से बोली जाने वाली भाषा को निरूपित कर सकते हैं।
- मुद्रित भाषा में अक्षर, शब्द और वाक्य होते हैं। ये विराम आदि चिन्हों से अंकित होते हैं।
- प्रत्येक मुद्रित सामग्री में प्रारंभ और समाप्ति होती है।
- मुद्रण भिन्न–भिन्न स्थानों में होता है।

उदीयमान पाठक पुस्तकों की पढ़ने के लिए उत्सुकता से प्रतीक्षा करते हैं और जैसे–तैसे लिखने के लिए प्रयास करते हैं। वे अपने चारों तरफ उपलब्ध मुद्रित सामग्री से अपने वातावरण का भाव निकालने का प्रयास करते हैं।

6.2.6 निर्मित वर्तनी

बच्चे के द्वारा अपनी भाषा की वर्तनी प्रणाली के ज्ञान का प्रयोग करते हुए शब्द को पढ़ने के प्रयास को "निर्मित या अस्थायी वर्तनी" कहा जाता है। निर्मित वर्तनी का प्रयोग उन्हें लिखित भाषा या लेखन से प्रयोग करने में सहायता करता है। बच्चे लिखने का प्रयास करते समय बहुधा ग्राफो फोनिक्स (अक्षर/ध्वनि संयोजन) प्रयोग करते हैं। यह प्रारंभिक लेखन बच्चों द्वारा ग्रहण की गई वर्तनी शैली का विकास संबंधी सूचक है।

बहुधा अध्यापक प्रत्येक शब्द को सही करने का प्रयास करते हैं और बच्चे को स्मरण कराते हैं कि अमुक शब्द की वर्तनी सही नहीं है। इस प्रकार का अधिक सुधार बच्चे को हतोत्साहित करता है। यह देखा गया है कि जो बच्चे निर्मित वर्तनी से लिखना प्रारंभ करते हैं, वे निरंतर लिखते हैं और लिखना पसंद करते हैं और वे शीघ्र ही परंपरागत वर्तनी पर आ जाते हैं जो आगे पढ़कर और मुद्रित सामग्री का प्रयोग करके विकसित होती है।

बहुधा छोटे–छोटे बच्चे विश्वास करते हैं कि शब्दों को अपने अर्थ के सदृश्य चित्रात्मक समानता दिखानी चाहिए। वे यह भी विश्वास करते हैं कि शब्दों में अक्षरों की कुछ संख्या होनी चाहिए। पिक, उंजे, ब्राउनेल, ड्रोज्डेल और हॉपमैन (1978) ने एक प्रयोग के दौरान पाया कि तीन वर्ष की आयु के बच्चों ने सभी दो अक्षरों के शब्दों को शब्दों के रूप में अस्वीकार किया, परंतु उनमें से कुछ अधिक आयु के बच्चों ने उन सभी शब्दों के समूह में रखा जिन्हें वे पढ़ सकते थे और जिन्हें वे नहीं पढ़ सकते थे, उन्हें अशाब्दिक समूह में रखा।

इसका अर्थ है कि बच्चे वयस्कों की अपेक्षा पढ़ने और लिखने को भिन्न तरीके से देखते हैं।

6.2.7 अंक ज्ञान

उदीयमान पाठक जब विद्यालय में प्रवेश करते हैं तो उन्हें अंकों की संकल्पना का भी अच्छा ज्ञान होता है और वे वस्तुओं की संख्या के बीच अंतर कर सकते हैं। वे एक निश्चित संख्या तक गिन सकते हैं और उनमें वस्तुओं में "अधिक" या "कम" की संकल्पना होती है।

यह कौशल भी परिवेश और वयस्कों से निरंतर अंतःक्रिया द्वारा विकसित होता है। मार्ग संकेतों, टेलीफोन नम्बर, मकान नम्बर और गिनती की समझ प्रत्यक्ष अनुभव से विकसित की जाती है।

बोध प्रश्न 1

टिप्पणी : (क) अपने उत्तरों को दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

(ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

1) उदीयमान पाठक विद्यालय आने से पहले कौन–से कौशल अर्जित कर सकते हैं?

....

....

....

....

2) आप साक्षरता सम्पन्न परिवेश से क्या समझते हैं?

....

....

....

....

3) वे भिन्न–भिन्न तरीके क्या हैं जिनमें विद्यालय–पूर्व बच्चा मौखिक और वर्णनात्मक कौशल विकसित करता है?

....

....

....

....

4) उदीयमान पाठक का अच्छा शब्द भंडार होता है। बच्चा इस शब्द भंडार को कैसे अर्जित करता है?

....

....

....

....

5) सहभागी पठन क्या है? यह बच्चे की पठन तत्परता को कैसे प्रभावित करता है?

....

....

....

....

....

6) ध्वनि विषयक और ध्वनि विज्ञान का ज्ञान बच्चे के भाषा कौशल विकसित करने में कैसे सहायता करता है?

....

....

....

....

....

6.3 बच्चे की साक्षरता में मातापिता की भूमिका

अध्ययनों से स्पष्ट हुआ है कि परिवार की संस्कृति, परिवेश और बच्चे की पठन उपलब्धि के बीच सकारात्मक संबंध है। प्रारंभिक पाठकों का पालन पोषण साक्षरता सम्पन्न परिवेशों में पाया गया है। इतना ही नहीं, कि जो बच्चे परिवार के सदस्यों के साथ स्नेहपूर्ण वातावरण में अधिकांश समय अंतःक्रिया करते हुए में बढ़े हुए हैं उन्होंने शीघ्र ही भाषा विकसित की है और वे भाषा का प्रयोग करते हुए विचारों और भावनाओं को व्यक्त करना सीख जाते हैं।

विद्यालय—पूर्व बच्चा अपना अधिकांश समय अपने माता—पिता या अभिभावक के साथ व्यतीत करता है। वह भिन्न—भिन्न तरीकों और अवस्थाओं में उदीयमान साक्षरता की अवस्थाओं से गुजरता है।

शैशवावस्था के दौरान माता—पिता निम्नलिखित विधियों का प्रयोग करते हुए प्रारंभिक साक्षरता बढ़ा सकते हैंः

- बच्चों को कपड़े या कार्ड बोर्ड की बनी ऐसी पुस्तकें, वे उनसे खराब न हो, प्रदान करके पुस्तकों की संकल्पना से परिचित कराना।
- इन पुस्तकों में आवरण, चित्र और कुछ पाठ्यांश होना चाहिए जिन्हें माता—पिता पढ़ सकें और उनके बारे में बातचीत कर सकें।
- बच्चे को प्रतिबिम्ब दिखाना जब वे उनके बारे में बात कर रहे हों।
- कविता की पुस्तकें ऊँचे स्वर से पढ़े, विशेषकर जिनमें संगीत, तुकबंदी और पुनरावृत्तिक राग में दोहराने वाले शब्द हों, जो गीत में होते हैं।
- परिवेश में वस्तुओं की और इशारा करना और बच्चे को उनका नाम बताना
- परिवेश में शब्दों की ओर ध्यान आकर्षित करना, जैसे संकेत, निर्देश और शब्दों का अर्थ स्पष्ट करना
- बच्चों के लिए गाना
- जो कुछ भी वे साथ कर रहे हों, जैसे भोजन करना, स्नान करना, या पड़ोस में खेलना या घूमना उससे संबंधित बातें सरल भाषा में करना।

जब बच्चा थोड़ा बड़ा हो गया है और इधर—उधर ठुमकना प्रारंभ करता है और बहुत कम वाक्य बोलता है, तब माता—पिता निम्नलिखित कार्य कर सकते हैंः

- बच्चों के आसपास बड़ी चित्र पुस्तकें, पॉप–अप पुस्तकें, पत्र–पत्रिकाएँ और खेल इत्यादि रखना;
- एक मुख्य पात्र और एक सरल कथानक की आसान कहानियाँ ऊँचे स्वर में पढ़ना
- उसके आसपास की वस्तुओं, कहानियों में घटनाओं के बारे में या परिवेश में मुद्रित सामग्री के बारे में बच्चे के प्रश्नों का उत्तर देना। भाषा विकास को प्रोत्साहित करने के लिए बच्चे को सुनना और बातें करना।
- पठन सामग्री को बच्चे के साथ–साथ पढ़ते हुए आगे बढ़ना, कहानियाँ पुनः कहने के लिए बच्चे को प्रोत्साहित करना।
- खाद्य सामग्री के डिब्बों, टिन या पैकेट पर लेबल देखने और टेलीविजन शो देखने तथा चर्चा करने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करना।
- बच्चे को क्रेयॉन, लेखन सामग्री, पेन्सिल या मार्कर देकर ड्राइंग और लिखने के लिए प्रोत्साहित करना।
- बच्चों को चित्र बनाने या जो कहानियाँ उन्होंने सुनी हैं, उन्हें लिखने के लिए प्रोत्साहित करें।
- पढ़ने और लिखने के लिए समय लेकर बच्चों के समझ रोल मॉडल के रूप प्रस्तुत होना।
- किताब पर और पुस्तकालयों में बच्चे को साथ लेकर जाना और उनकी ओर से पुस्तकें लेना।
- कविताओं, ध्वनियों के साथ मस्ती और खेल करते हुए ध्वनि विषयक जागरूकता विकसित करना।

ऐसे माता–पिता जो पढ़ने और लिखने की आवश्यकता के प्रति संवेदनशील है और जो बच्चों को पुस्तकें और आकर्षक रंग–बिरंगी सामग्री देने का हर संभव प्रयास करते हैं और कहानियों तथा वस्तुओं के बारे में बात करने में समय व्यतीत करते हैं वे बच्चों में मुद्रित सामग्री और पठन के प्रति सकारात्मक मनोवृत्ति उत्पन्न करते हैं। इसके अतिरिक्त, घर में स्नेहपूर्ण परिवेश बच्चे में आत्मविश्वास पैदा करता है जिससे बच्चा प्रयोग कर सकता है और नई बातें सीख सकता है।

6.4 साक्षरता विकास में अध्यापक की भूमिका

अध्यापक को उदीयमान साक्षरता की संकल्पना से परिचित होना चाहिए ताकि वह विद्यार्थी की निश्चित आवश्यकताएँ पहचान सकें और विद्यालय में प्रवेश के समय बच्चे का साक्षरता स्तर निर्धारित कर सकें। अध्यापक तब बच्चे की साक्षरता सुधारने के लिए आवश्यक क्रियाकलापों की योजना बना सकता हैं।

साधारणतया पूर्व प्राथमिक विद्यालय घर का एक विस्तार होने के कारण, वहाँ अध्यापक घर जैसे साक्षरता सम्पन्न परिवेश को प्रोत्साहित कर सकता है, जहाँ बच्चे के चारों तरफ विभिन्न प्रकार की मुद्रित सामग्री, बहुत से चित्र और कक्षाकक्ष की दीवारों पर रंगीन मुद्रित सामग्री होती है और यथासंभव बच्चों के लिए ऊँचे स्वर में पढ़ा जा सकता है। अन्य कार्यकलाप जो अध्यापक कर सकता है, निम्न प्रकार हैं:

- ऐसे मस्ती भरे कार्यकलाप आयोजित करें, जिसके लिए याद करना आवश्यक नहीं है।
- लय–ताल (रिद्म) के साथ ध्वनियों का शब्द ज्ञान (ध्वनि विखंडन, ध्वनि प्रतिस्थापन और ध्वनि विलोपन) और राग में गाना जैसे पैट–टैप, पैट–मैट–फैट, फैट–मेट–पैट, बेल्ट–बेल, फ्लोर–फ्लो, ट्रेन–ट्रेन बच्चों की जागरूकता बढ़ाने के लिए मस्ती भरे कार्यकलाप आयोजन करना
- ऐसी कविताओं को गाना जिसमें शब्दों का खेल हो और पुनरावृत्ति हो, जैसे The wheels of the bus go round, round and round/the wipers of the bus go swish, swish, swish ;k five little monkeys jumping on the bed/ Four little monkeys and so on)
- बच्चों में अंतःक्रिया को प्रोत्साहित करना।
- ऐसे कार्यकलाप आयोजित करना जिनसे बच्चे भाषा से प्रयोग कर सकें। उदाहरण के लिए, मीरा सेब/संतरे/बिल्लियाँ/थैले (शब्दों के बदलते हुए) पसंद करती है। माँ मटर खाती है/पकाती है/खरीदती है/ पसंद करती है, आदि।
- बालू और चिकनी मिट्‌टी से अंगुलियों का खेल
- बच्चों के लिए ऊँचे स्वर से पढ़ना और उन्हें कहानियाँ पुनः कहने के लिए प्रोत्साहित करना
- कहानियों, कथानक और पात्रों पर चर्चा
- पहेलियों, गीतों और नर्सरी कविताओं का प्रयोग करना
- शब्दों के बारे में बात करना ताकि बच्चा समझे कि विचार व्यक्त करने के लिए शब्द प्रयुक्त किए जाते हैं।

अन्य बातें जो अध्यापक कर सकता है, वह कक्षाकक्ष में वस्तुओं पर सूचक (लेबल) लगा सकता है और विद्यार्थियों के नामों की सूची और विद्यार्थियों की जन्म तिथियों सहित महत्वपूर्ण तारीखें दीवार पर लगा सकता है।

अपनी कक्षाओं के लिए अधिगम सामग्री चुनते समय अध्यापक सुनिश्चित कर सकते हैं कि कहानियों, कविताओं, पत्रपत्रिकाओं या काव्य में निम्नलिखित तत्व विद्यमान हैं:

- पुनरावृत्तिक वाक्यांशों के रूप में पूर्वानुमान के अवसर है।
- चित्रों और स्थिति के विवरण के रूप में संकल्पनात्मक सहायता।
- उच्च आवृत्ति वाले शब्दों की उपस्थिति
- विकूटनीय शब्दों की उपस्थिति (एक अक्षर – एक ध्वनि सम्बद्धता के साथ) जैसे पिन, टिप, पिल, लिप, (pin, tip, pill, lip) आदि।

अध्यापक शब्द ज्ञान कार्यकलापों, अक्षर कार्यकलापों का आयोजन कर सकता है, बच्चों को पुस्तकों से सीखने में सहायता कर सकता है और पढ़ने और लिखने में अक्षर की भूमिका पर ध्यान केन्द्रित कर सकता है। बच्चों को साहित्य के विभिन्न रूपों जैसे कहानियों, कविताओं, विज्ञान पर सरल ज्ञान से भी परिचित किया जाना चाहिए।

6.5 कम साक्षर बच्चों के लिए प्रयास

संकट में बच्चेः अध्यापक कुछ ऐसे लक्षणों को खोज सकता है जो यह दर्शाते हैं कि बच्चे में साक्षरता अर्जन कौशलों का संकट है। बच्चे की आवश्यकताएँ सुनिश्चित करने के बाद अध्यापक साक्षरता विकास में सहायता करने के लिए सुसंगत विधियों का प्रयोग कर सकती हैं जिन पर पिछले भाग में चर्चा की गई है।

विद्यालय में प्रवेश करने वाले बच्चों में अपर्याप्त साक्षरता के कुछ सूचक निम्नलिखित हैंः

- अल्प भाषा और सम्प्रेषण कौशल
- अपर्याप्त ध्वनि–विषयक जागरूकता और निम्न–स्वनिमिक संसाधन
- न्यून अक्षर ज्ञान
- साक्षरता कार्य दक्षतापूर्वक करने में अक्षमता जैसे चित्रों का नाम बताना, त्वरित अनुक्रम में वस्तुओं का रंग बताना
- परिवेश में मुद्रित सामग्री की विद्यमानता की जागरूकता न होना
- पुस्तकों में कोई रुचि न होना
- अंग्रेजी के संदर्भ में, ऐसे घरों से होना है जहाँ अंग्रेजी का वातावरण नहीं है।

यह स्थिति निम्न सामाजिक, आर्थिक स्तर के कारण हो सकती है जहाँ माता–पिता की निरक्षरता के कारण स्वयं अपर्याप्त भाषा होती है और जिनका भाषा पर अच्छा प्रवाह है उन लोगों से बहुत कम अंतःक्रिया होती है। यह संभव है कि बच्चे ऐसे घरों से आते हैं जहाँ मुद्रित सामग्री के प्रति जागरूकता कम हो और वांछित मुद्रण अनुभव न हुआ हो।

शहरी व्यवस्था में भी बच्चा अपर्याप्त साक्षरता से आ सकता है जब बच्चा अर्ध साक्षर देखभाल करने वाले घर में बड़ा होता है जहाँ व्यस्त माता–पिता अपने बच्चे को समय नहीं दे सकते हैं।

गरीब घरों के बच्चे जिनमें विकासात्मक विकार, अपर्याप्त भाषा निपुणता कौशल के साथ–साथ जिनमें अपर्याप्त भाषा साक्षरता का वातावरण होता है, उन्हें पढ़ने और लिखने में कठिनाई हो सकती है। इससे अधिगम समस्याएँ भी उत्पन्न हो सकती हैं। ऐसे बच्चे सीखने और अक्षरों का नाम याद करने में कठिनाई, जिनमें उनके अपने नाम के अक्षर भी होते हैं सरल निर्देश समझने, नर्सरी कविताओं या कहानियों में निम्न रुचि और निम्न सामाजिक कौशल को प्रदर्शित करते हैं।

प्रयास

अध्यापक पिछले भाग में उल्लेखित सभी विधियों का प्रयास कर सकते हैं परंतु विशेषकर संकट की स्थिति में बच्चों के लिए निम्नलिखित कर सकते हैंः

- प्रत्येक बच्चे पर कार्यकलापों और खेलों द्वारा ध्वनि–विषयक जागरूकता पर ध्यान देना। उदाहरण के लिए, pat /p æ t/, pan /p æ n/, tall /t?:l/ मौखिक कार्यकलाप का प्रयोग करते हुए या अक्षर कार्ड या प्लास्टिक अक्षरों द्वारा
- S ध्वनि प्रतीक संबंध पर आधारित कार्यकलाप आयोजित करना जैसे अक्षरों को ध्वनि में रूपांतरित कर शब्दों को ध्वनि में बोलने के लिए विद्यार्थियों को अनुमति देना (अक्षर ch i n) (ध्वनियाँ /t? ? n/)

- शब्द ध्वनि कार्यकलाप आयोजित करना जैसे (शब्द, प्रतिस्थापन, ध्वनि विलोपन और ध्वनि विखंडन) जैसा कि ऊपर दिया गया है।
- बच्चे के लिए ऊँचे स्वर से पढ़ें और प्रश्नों द्वारा चर्चा में बच्चे को जोड़ें और इस प्रकार बच्चे को प्रभावित करें कि शब्द विचारों को प्रकट करने में प्रयुक्त किए जाते हैं, उदाहरण के लिए उनके प्रश्न पूछें जैसे भालू के बच्चे ने कैसे कहा कि खाने के लिए कोई दलिया नहीं है) (किसी ने मेरा सारा दलिया खा लिया है) या जिंजरब्रेड व्यक्ति ने पशुओं से कैसे कहा कि वह उसे खाना नहीं चाहता है" "भागो, भागो, जितनी तेजी से भाग सकते हों। आप मुझे नहीं पकड़ सकते हों। मैं जिंजर ब्रेड मैन हूँ। रुको, रुको, मैं तुम्हें खाना चाहता हूँ"।
- बच्चों को साहित्य/अधिगम–सामग्री को बार–बार और विविध अनुभव दें।
- बच्चे को परिवेश में मुद्रित सामग्री के प्रति जागरूक करें।
- बच्चा जो कुछ कहना चाहता है, ध्यान से सुने और उसका सम्प्रेषण कौशल विकसित करने तथा स्वाभिमान बढ़ाने के लिए बातचीत में लगाएँ।

साधारणतया अध्यापक निम्नलिखित उपाय कर सकता है:

- हास परिहास और सरल कार्यकलापों के माध्यम से कक्षाकक्ष की ओर बच्चे को आकर्षित करना।
- कक्षा–गृह सहभागिता को मजबूत करना और माता–पिता की, विशेष रूप से अर्ध शिक्षित या अशिक्षित माता–पिता को नियमित रूप से परामर्श देना।
- सुनिश्चित करें कि विद्यालय में बच्चों के लिए प्रचुर मुद्रित सामग्री उपलब्ध है।
- बच्चों के लिए रुचिकर सम्प्रेषणात्मक कार्यों के माध्यम से बोलने, पढ़ने और लिखने के लिए अवसरों का सृजन करना और कक्षाकक्ष में पठन और लेखन सामग्री आसानी से उपलब्ध करना।

निम्न–सामाजिक आर्थिक समूह के लिए विद्यालय में कम संसाधन हो सकते हैं, जैसे पुस्तकें तथा खिलौने और कक्षाकक्ष की दीवारों में कम मुद्रण, प्रतीक और चित्र हो सकते हैं और सारे पाठ्यचर्या की एकीकृत मुद्रित सामग्री नहीं भी हो सकती है, शब्दों को केवल विषय तक ही सीमित रखा जा सकता है और ये अन्य विषयों से संबद्ध नहीं हो सकते हैं। यदि पुस्तकों का विकल्प कम है तब अध्यापक को लिए पढ़ने के लिए सीमित पुस्तकें हैं और बच्चों को केवल कुछ उपलब्ध पुस्तकों से संबंधित अनुभव दे सकता है।

अध्यापक परिवेश में आसानी से उपलब्ध अन्य मुद्रित सामग्री जैसे लेबल, विज्ञापन, या अध्यापन पर पाए गए पाठ, निर्देश, चेतावनी आदि का प्रयोग कर सकता है। अध्यापक कार्ड बोर्ड, कागज (कट आउट), कपड़ा (सभी किस्म की कठपुतलियाँ) या लकड़ी या अन्य अपशिष्ट सामग्री से खिलौने बना सकता है।

बोध प्रश्न 2

टिप्पणी : (क) अपने उत्तरों को दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

(ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

1) संक्षेप में उल्लेख कीजिए कि नवजात शिशु के माता–पिता को यह सुनिश्चित करने के लिए उसके विकास अवस्था के दौरान क्या करना आवश्यक है कि उनके बच्चे को औपचारिक विद्यालय में पढ़ने, लिखने और अधिगम में किसी कठिनाई का सामना न करना पड़ें।

....

....

....

....

2) वे क्या लक्षण हैं जो यह इंगित करते हैं कि बच्चे को पढ़ने, लिखने और स्मरण करने में कठिनाई बढ़ने की संभावना है?

....

....

....

....

3) वे प्रयास कौन–से है जिन्हें अध्यापक विद्यालय के प्रारंभिक वर्षों के बच्चों की उदीयमान साक्षरता बढ़ाने के लिए कर सकता है?

....

....

....

....

6.6 भाषा विकास और श्रवण कौशल

बच्चे की सारी प्रारंभिक भाषा लिखित के बदले मौखिक होती है। और बच्चे का श्रवण पहलू मौखिक पहलू से पहले आता है। बच्चों की भाषा समझ का विकास दो दिशाओं में साथ–साथ होता है। एक दिशा संपूर्ण स्थिति या घटना "सोने का समय", "भोजन का समय", इत्यादि की समझ का विकास है। बच्चा इन स्थितियों का अभिप्राय समझता है और यह भी समझता है कि उनमें भाषा कैसे कार्य करती हैं। दूसरी दिशा व्यक्तिगत ध्वनियों उनके बाद शब्द और अंत में वाक्यांश की समझ का विकास है।

हमारी पहली भाषा में श्रवण अधिगम के लिए पर्याप्त संज्ञानात्मक विकास और सामाजिक और भाषायी निर्देशों का कई वर्षों तक सतत् ध्यान रखा जाता आवश्यक है। बच्चे जिनके साथ रहते हैं, वे बच्चों से विशेष तरीके से व्यवहार करते हैं, ताकि बच्चे धीरे–धीरे पारिवारिक क्रियाकलापों और अन्य सामाजिक कार्यों में सम्मिलित होने के लिए सक्षम हो सकें। इस

प्रक्रिया में बच्चे विशेष प्रकार की भाषा सीखते हैं जो उन्हें अपनी भाषा अर्जित करने में सहायता करती है। तुलनात्मक रूप में द्वितीय भाषा में श्रवण अधिगम अपेक्षाकृत अधिक कठिन है। मुख्य कठिनाई विकास संबंधी है। हमारे चारों तरफ की दुनिया को समझने और साथ ही नए विचार तथा संबंधों को समझने और व्यक्त करने के लिए हम सभी अपनी प्रथम भाषा सीखते हैं। उदाहरण के लिए, हमने उसी समय गाय शब्द समझना सीखा जैसे ही हमने गाय की बुनियादी संकल्पना सीखी (अर्थात् चार टाँगे होती हैं, वह चलती है, यह पशुओं के वर्ग की होती है) जब हमने बुनियादी उद्देश्य और संकल्पना सीख ली और शब्दों से उन्हें सम्बद्ध कर लिया, तब हमने भाषा सीखने का मुख्य उद्देश्यों में से एक जो "आत्म–अभिव्यक्ति" है, अर्जित कर ली है। चूँकि साधारणतया दूसरी भाषा का अधिगम विकास की उत्तर–अवस्थाओं में होता है इसलिए यह बच्चे के संज्ञानात्मक और सामाजिक विकास से कम सम्बन्धित है। अतः भाषा सीखने का मुख्य उद्देश्य अर्थात् "आत्म अभिव्यक्ति" इसमें शामिल नहीं है, क्योंकि पहली भाषा पहले से ही माध्यम प्रदान करती है जिससे बच्चा अपने आपको अभिव्यक्त कर सकता है। इससे द्वितीय भाषा के अध्यापक का कार्य अधिक चुनौतीपूर्ण बनता है, इसलिए द्वितीय भाषा के शिक्षण को कुछ वास्तविक उद्देश्यों से जोड़ना महत्वपूर्ण है जिससे बच्चा इसे सीख सके।

हम अपने बचपन में वो "केयर टेकर" (care-taker) भाषा अपनाते हैं जो शब्द और ध्वनियों का सरलीकृत रूप होती हैं जो हमारी अधिगम क्षमताओं औ रुचियों को प्रत्यक्ष रूप से पोषित करती है। इस "केयर टेकर" भाषा ने हमें अपनी श्रवण क्षमता विकसित करने के लिए उपलब्ध अवसरों का प्रयोग करने में सहायता की है। द्वितीय भाषा को सीखने वाले शायद ही कभी सम्पन्न और बोधगम्य निदेशों में ऐसी सुलभता अनुभव करते हैं।

परिणामस्वरूप वे पूर्ण भाषा अर्जन के लिए आवश्यक परिस्थितियों जैसे उपयुक्त सामाजिक परिवेश, से वंचित होते हैं।

बोलते समय बच्चा प्रयोग की जाने वाली भाषा का चयन स्वयं करता है। इसलिए, कुछ सीमा तक वह सम्प्रेषणात्मक युक्तियों, जैसे बोलते समय व्याख्या या सरलीकरण के माध्यम से अपने भाषाकोश की कमियों की प्रतिपूर्ति कर सकता है। परंतु साधारणतया वह भाषा पर दूसरों द्वारा निदेशित किसी प्रकार नियंत्रण नहीं कर सकता है। उसे जो कोई भी भाषा निदेशित की गई है, उससे अभिप्राय निकालने के लिए तैयार रहना चाहिए। इसलिए यह पर्याप्त नहीं है कि उसे केवल उस सीमा तक भाषा समझने योग्य होना चाहिए जिस सीमा तक वह बोल सकता है। उसका सुग्राही भाषाकोश (अर्थात् वह भाषा जिसे वह ग्रहण कर सकती है और समझ सकती है) मूल वक्ता (अर्थात् एक अन्य वक्ता द्वारा उस पर निदेशित और प्रयुक्त भाषा) के उत्पादनकारी भाषाकोश से मिलता–जुलता होना चाहिए। उसे यह भाषा समझनी आवश्यक होगी। इसके साथ ही, बच्चे को ऐसे परिस्थितिक और निष्पादक कारकों की व्यापक श्रेणी जैसे शोरगुल, विचलन, उच्चारण में विविधता, आदि का सामना करने के लिए तैयार होना चाहिए जो उसके नियंत्रण से बाहर है।

बहुधा श्रवण को निष्क्रिय कौशल कहा जाता है परंतु आधुनिक भाषाविद इसके भ्रामक होने का दावा करते हैं (लिटिलवुड, 1991) क्योंकि श्रवण के लिए श्रोता से सक्रिय प्रतिभागिता आवश्यक है। वक्ता की अपेक्षानुरूप संदेश के पुनर्निर्माण के लिए श्रोता का सक्रिय योगदान आवश्यक है। बच्चा अपने द्वारा सुनी गई ध्वनि की धारा प्रवाहित को अपने भाषा के ज्ञान का प्रयोग करके अर्थपूर्ण इकाइयों में विभाजित करता है। बच्चा इन्हें अपने पिछले भाषा अनुभव से सम्बद्ध करके इनका उपयुक्त अभिप्राय ज्ञात करने में सक्षम है। वास्तव में अधिकांश कथन जिन्हें हम अपने दैनिक जीवन में सुनते हैं, भिन्न–भिन्न परिस्थितियों में भिन्न–भिन्न अर्थों में सोचे जा सकते हैं और इसका केवल यह कारण है कि बच्चा सक्रिय

रूप से संप्रेषण प्रक्रिया में सम्मिलित होकर उन्हें एक ही उपयुक्त अर्थ से सम्बद्ध करने में सक्षम है। इसलिए बच्चा उन विचारों को सुनकर अर्थ या समझ नहीं प्राप्त कर सकता है जो उसके बौद्धिक या सांस्कृतिक अनुभव से असम्बद्ध हैं।

चूँकि श्रवण ऐसा महत्वपूर्ण भाषा और संचार कौशल है, इसलिए भाषा विद्यार्थी को कैसे सुनना है, क्यों सुनना है, कब सुनना है, क्या और किससे सुनना है, में निपुण होना आवश्यक है। हम श्रवण के सभी मुद्दों को संक्षेप में समझने का प्रयास करेंगे।

श्रवण के घटक कौशल

टेप या मौखिक अंतःक्रिया के सतत और सुनियोजित श्रवण अभ्यास के प्रयोग द्वारा बच्चों और वयस्कों में द्वितीय भाषा में अनुदेशन, भाषा शिक्षण का एक संपूर्ण उपागम है। परंतु भाषाविदों ने श्रवण कौशल के प्रकारों का अधिक विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण भी देखा है (माइकल रोस्ट,1994)। श्रवण के लिए कुछ महत्वपूर्ण घटक कौशल हैं:

- ध्वनियों के बीच भेद पहचानना (श्रवण प्रत्यक्षीकरण)।
- शब्द पहचानना।
- स्वराघाती शब्दों को पहचानना और शब्दों का वर्गीकरण करना।
- बातचीत में प्रकायों की पहचान करना (जैसे बधाई देना, क्षमा माँगना, आदेश देना, प्रश्न पूछना)।
- अभिप्राय संरचना करने के लिए भाषायी संकेतों को परा–भाषावादी संकेतों (स्वरशैली और बलाघात) से तथा ग़ैर–भाषायी संकेतों (इशारों और स्थिति में सुसंगत वस्तुओं) से भी सम्बद्ध करना।
- महत्वपूर्ण शब्दों, शीर्षकों (विषयों) और विचारों को दोहराना।
- वक्ता को समुचित प्रतिपुष्टि देना।
- जो वक्ता ने कहा उसे पुनः निरूपित करना।

सफल श्रवण में इन घटक कौशलों का एकीकरण अंतर्निहित है। इन कौशलों के एकीकरण व्यक्ति की श्रवण क्षमता निर्मित करता है। बच्चे को अपने नियंत्रण से बाहर के स्थितिपरक और निष्पादन कारकों की विशाल श्रेणी का सामना करने के कौशल की भी आवश्यकता है। उदाहरण के लिए,

- बच्चों को भाषा ऐसी स्थिति में समझनी आवश्यक होगी जहाँ भौतिक कारकों जैसे पृष्ठभूमि शोर, दूरी आदि के कारण संचार कठिन हो गया है।
- बच्चे को प्रायः प्रतिदिन की भाषा में प्रयोग होने वाले उन भिन्न–भिन्न उच्चारणों का आदी होना चाहिए जो पूरी तरह से योजनाबद्ध नहीं हैं परंतु इसमें गलत, शुरुआत या संकोच आदि शामिल हैं।
- बच्चे को भिन्न–भिन्न उच्चारण, विशेषकर बोली में क्षेत्रीय विभिन्नताएँ तथा संकेतों में विविधता समझने की आवश्यकता होगी।
- हमारे चारों तरफ इतनी अधिक ध्वनियाँ हैं कि बच्चे को अपने श्रवण में चयनात्मक होने के लिए कौशल विकसित करना आवश्यक है और केवल वह ही सुनना है जो महत्वपूर्ण है तथा अभिप्राय समझने के लिए सुसंगत है। बच्चों को यह भी जानना चाहिए कि कैसे सुना जाता है।

- स्थिति पर निर्भर होते हुए श्रवण सघन हो सकता है अर्थात बच्चे को अत्यधिक एकाग्र होना चाहिए। सामान्यतया बच्चे संपूर्ण कथित सामग्री पर अपना ध्यान देने लगते हैं।

बोध प्रश्न 3

टिप्पणी : (क) अपने उत्तरों को दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

(ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

1) व्यक्ति अच्छा श्रोता कैसे बन सकता है?

....

....

....

....

....

प्राथमिक विद्यालय में श्रवण कौशल का शिक्षण

श्रवण विकसित करने का एक तरीका पाठ्यचर्या के भिन्न–भिन्न विषयों में विविध प्रकार के श्रवण आधारित अभ्यासों को शामिल करना है। इसके पीछे तर्क यह है कि पाठ्यचर्या में ऐसे एकीकृत क्रियाकलाप होने चाहिए जो बच्चे में बोलकर स्वयं को अभिव्यक्त करने की योग्यता बढ़ाएँ अर्थात नई संकल्पनाएँ अर्जित करने के लिए श्रवण और कथन को अतिरिक्त साधनों के रूप में प्रयोग करना।

- बच्चों के लिए श्रवण अभ्यास में श्रवण संबंधी विभेदीकरण विकसित करने के लिए शब्द क्रीडा और बच्चों की कविताएँ, श्रवण संबंधी स्मृति विकसित करने के लिए कविताओं और गानों पर लयबद्धता में ताली बजाना, श्रवण संबंधी शब्द भंडार विकसित करने के लिए कविताओं और गीतों को दोहराना, खेल के लिए अनुदेश, अधिक जटिल खेल और क्रियाकलाप विद्यार्थियों का ध्यान विकसित करने के लिए प्रयुक्त किए जा सकते हैं। कई प्रारंभिक विद्यालयों के अध्यापक निम्नलिखित खेलों से परिचित होंगेः टेलीफोन खेल (बच्चों द्वारा एक पंक्ति में एक–दूसरे के कान में संदेश फुसफुसाना, यह देखने के लिए कि ठीक ढंग से सुनाई देता है) दिशा खेल (केवल मौखिक अनुदेशों का प्रयोग करते हुए आँख पर पट्टी बाँधकर निदेशों के अनुसरण करते हुए कमरे में इधर–उधर चलना)। "ध्वनि कहानी" (रिकॉर्ड किए गए ध्वनि प्रभाव और पर्यावरण संबंधी ध्वनियाँ सुनना और इन पर आधारित कहानी लिखना या कार्टून बनाना, जिसमें ये ध्वनियाँ शामिल हैं)।

थोड़ा अधिक बड़े बच्चों के लिए अधिक संरचित श्रवण बोध क्रियाकलाप जैसे लघु कथाओं, रिकार्ड की गई वार्ताओं, दस्तावेज आदि का प्रयोग करना, उपयुक्त है। उपर्युक्त साधनों द्वारा विद्यार्थियों को अपने श्रवण कौशल विकसित करने में सहायता के लिए अध्यापक को मुख्य जानकारी जैसे मुख्य विचार, महत्वपूर्ण ब्यौरे, घटनाओं के अनुक्रम सुनने पर ध्यान केन्द्रित करने में उनकी सहायता करनी चाहिए। अधिकांश लोग श्रवण कौशल विकसित कर सकेंगे यदि उन्हें सुनने के लिए निरंतर चुनौतीपूर्ण अवसर दिए जाते हैं। परंतु इसमें कई लोग कठिनाई अनुभव करते रहेंगे और ऐसी दो प्रकार की समस्याओं की पहचान की गई है जो अनुदेशन में सबसे अधिक रुकावट उत्पन्न करते हैं:

1) **वरीयता वाली सूचना का अत्यधिक प्रयोग:** यह देखा गया है कि कई विद्यार्थियों को सुनकर समझने में कठिनाई होती है क्योंकि वे महत्वपूर्ण जानकारी की उपेक्षा करते हैं और उन तथ्यों पर पूर्णतः निर्भर करते हैं जो उन्हें अच्छे लगते हैं। उनका ध्यान अन्य सुसंगत तथ्यों की ओर दिलाया जाना आवश्यक है।

2) **बोधात्मक अनुश्रवण का अभाव:** कमजोर श्रोताओं में तथ्यों का मूल्यांकन किए बिना या तथ्यों में असंगति देखे बिना एक समय में एक ही तथ्य का वर्णनात्मक विवरण और व्याख्याएँ समझने की प्रवृत्ति होती है। बच्चों को प्रारंभ में पढ़ने के कई कार्य दिए जाने चाहिए, जहाँ बच्चे की आँखें असंगतियों का पता लगाने के लिए पीछे या आगे घूमती है। बाद में इसी प्रकार के कार्यों को श्रवण कार्यों के रूप में दिया जाना चाहिए। उन्होंने जो कहानियाँ सुनी हैं, जिन स्थानों पर वे गए हैं, घर का वातावरण, टेलीविजन सुनने वाले कार्यक्रम, बच्चों को विभिन्न ध्वनियों को समझ कर मौखिक तथा अमौखिक का अर्थ देने में सक्षम होने के लिए पृष्ठभूमि प्रदान करते हैं। अध्यापक को ऐसे कार्य विकसित करने चाहिए जो बच्चों को उनके श्रवण के कुछ विशेष पहलुओं को सुधारने के लिए सहायता करेंगे। दक्ष, सक्रिय, एकाग्र श्रवण सभी कक्षाओं में पढ़ाया जाना आवश्यक है।

बच्चों को श्रवण शिक्षण के लिए निम्नलिखित की आवश्यकता होती है:

1) स्पष्ट रूप से समझना कि यह क्या है जिसे वे सीखने का प्रयास कर रहे हैं।

2) श्रवण के लिए उनकी क्षमता की जानकारी होना।

3) यह पता लगाने के अवसर होना कि वे अपनी श्रवण क्षमता सुधार सकते हैं।

4) बहुत प्रकार के श्रवण अनुभवों के अवसर मिलना—पुरुषों और महिलाओं द्वारा बहुत प्रकार की सामग्री को पढ़ने और बोलने की आवाज, संगीत, पर्यावरण में ध्वनियाँ आदि।

बच्चे औपचारिक, अवैयक्तिक परिस्थितियों के स्थान पर अनौपचारिक परिस्थितियों में बेहतर बोलते और सुनते हैं। ऐसा करने का एक सुविधाजनक प्रभावी तरीका बच्चों को स्वयं ऐसे समूह बनाने देना है। श्रवण क्रियाकलाप की अवधि सावधानीपूर्वक तय की जानी चाहिए। बच्चे द्वारा कोई भी श्रवण कार्य करने की समयावधि उसके रुचि काल और एक निश्चित आयु में उसकी शारीरिक निष्क्रियता के समय की मात्रा पर निर्भर करता है। एकाग्रता से श्रवण प्रोत्साहित करने के लिए बच्चों को प्रेरित किया जाना चाहिए। बच्चों में रुचि कई प्रकार के ऐसे श्रवण पश्च क्रियाकलापों द्वारा उत्पन्न की जा सकती है जो बच्चे सुनते हैं उस पर वे व्यक्तिगत अभिव्यक्ति दे सकते हैं – प्रश्न पूछकर, अभिनय के द्वारा, कागज, पेंट और क्ले से अपने विचार व्यक्त करना।

कहानी प्रारंभ करने से पहले श्रवण कौशल पढ़ाने के लिए उपयुक्त पाठ आवश्यक है। अध यापक कह सकता है कि "मैं कहानी कब समाप्त करूँ, आइए, देखें, यदि आप जानते हैं, रसगुल्लों को क्या हुआ?" या वह कभी भी रुककर प्रश्न पूछ सकता है जो एकाग्रता का परीक्षण करता है, जैसे "वृक्ष से आम क्यों गिरते हैं? उन्होंने क्या सुना या महत्वपूर्ण बिन्दुओं को दोहराना, आदि का बच्चों को मौका देना चाहिए इससे ज्ञान धारण बढ़ता है और जो श्रवण का प्रयोजन है।

अध्यापक की भूमिका

अध्यापक जो अच्छे श्रवण को महत्व देता है वास्तव में, बच्चों को सुनने के लिए अवसर देता है। श्रवण एक ऐसा क्षेत्र है जो अध्यापक और विद्यार्थी को आगे बढ़ने का और आपस में

अदला–बदली का एक साथ अवसर देता है। वह बच्चों को सावधानी के साथ सुनने के लिए चुनौती देकर, निर्देशों की पुनरावृत्ति से बचाता है। यदि अतिरिक्त स्पष्टीकरण की आवश्यकता होती है तो बच्चों को एक–दूसरे की सहायता करने दी जाती है। नए विषय, अनुदेश और क्रियाकलाप बच्चे की एकाग्रता देखकर दिए जाते हैं। उन्हें कठिन, उबाऊ या भारी नहीं होना चाहिए। विविधता से कक्षाकक्ष में रुचि बढ़ती है, नई उमंग उत्पन्न होती है और बेहतर श्रवण अवसर उत्पन्न होते हैं।

अध्यापकों के पास विद्यालय में प्रतिदिन अच्छा श्रवण व्यवहार देने के लिए बहुत से अवसर होते हैं। उपयुक्त समय के वास्तविक कथनों में निम्नलिखित सम्मिलित हो सकते हैं:

- मुझे पसंद है कि तुम मुझे कैसे देखते हों, जब तुम मुझे सुन रहे हों।
- मैं आपके उत्तरों से बता सकता हूँ कि आप मुख्य विचारों को ध्यान से सुन रहे हैं।
- मैं देखूँगा कि इन निर्देशों को प्राप्त कररने लिए तैयार होने में आप कहाँ रुकते हैं।

प्रशंसा और प्रेक्षण के प्रत्येक कथन सदैव बच्चों को अच्छे लगते हैं। वास्तविक सकारात्मक प्रतिपुष्टियों को विद्यार्थियों द्वारा पुरस्कार के रूप में महत्व दिया जाता है। इस प्रकार की टिप्पणी विद्यार्थियों को यह ज्ञात होने देती है कि अध्यापक कार्य या व्यवहार को कितना महत्व देता है। बच्चे बहुधा अपने सहपाठियों द्वारा अच्छे श्रवण पर टिप्पणी देने में अध्यापक के उदाहरण का अनुसरण करते हैं।

बोध प्रश्न 4

टिप्पणी : (क) अपने उत्तरों को दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

(ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

1) श्रवण कौशल विकसित करने में विद्यालय की भूमिका क्या है?

....

....

....

....

....

6.7 भाषा विकास और वाचन कौशल

भाषा की कक्षा में मौखिक कौशल विकसित करने के महत्व को कम नहीं आंका जा सकता है। बोली प्रयोगकर्त्ता को भाषा के उपयोग करने की प्रविधि को जाने बिना विचार व्यक्त करने देती है। इसलिए, लिखित की अपेक्षा यह, द्वितीय भाषा के अध्येता के लिए ज्यादा आसान है। भाषा प्रयोग में त्रुटियों को मौखिक भाषा के अधिक प्रयोग के द्वारा दूर किया जा सकता है। यद्यपि लिखित भाषा की अपेक्षा यह एक नए सीखने वाले के लिए तब अधिक जोखिम भरा है, जब उसका सामना एक बड़े समूह से होते हैं, ऐसे में वह अपने आपको अधिक खोखला और असुरक्षित महसूस करता है। मौखिक अभिव्यक्ति की प्रवाहिता विकसित करने के लिए अनुकूल वातावरण सुनिश्चित करना आवश्यक है। सहपाठियों द्वारा उनकी हँसी और मजाक बनाए जाने के प्रति बच्चे बहुत संवेदनशील होते हैं। नियम बनाने

से पहले प्रारंभ में बच्चों से चर्चा करना महत्वपूर्ण है ताकि कक्षाकक्ष में ऐसा उपयुक्त परिवेश बनाया जा सके जिसमें बच्चे गलतियाँ करने पर भयभीत न हों। बच्चों को जानना चाहिए कि गलतियों से कैसे सीखा जाता है और गलतियों को अधिगम प्रक्रिया का स्वाभाविक भाग मानना चाहिए। द्वितीय भाषा को प्रभावी तरीके से प्रयुक्त करने के लिए सीखना तब तक कठिन है जब तक कि यह प्रथम भाषा सीखने का समान साधारण सामाजिक संपर्क में न सीखी जाए। साधारणतया बच्चों की उनके द्वितीय भाषा के स्वाभाविक परिवेश से दूरी, उनमें भाषा अधिगम में कठिनाई बढ़ाती है। जब अंग्रेजी भाषी बच्चा विद्यालय में पहली बार आता है, तो वह अंग्रेजी की भाषा संरचना में इतना पारंगत होता है जो कभी–कभी दूसरी भाषा बोलने वाले बच्चे के लिए इतना कठिन होता है कि उसे पाने में इन्हें वर्षों लग जाते हैं। द्वितीय भाषा सीखने का अभिप्राय यह नहीं है कि बच्चे को अपनी भाषा और संस्कृति त्याग देनी चाहिए बल्कि उसे इतना शिक्षित होना चाहिए कि जब आवश्यकता हो तो वह अंग्रेजी (द्वितीय भाषा) में कार्य कर सके परिस्थिति की माँग पर वह अपनी भाषा में भी कार्य कर सकें। यह अध्यापक के लिए वास्तविक चुनौती है। यह सुविदित है कि छोटे बच्चे उस तरीके से द्वितीय भाषा पढ़ना जल्दी सीखते हैं जिस तरीके में उन्होंने अपनी प्रथम भाषा सीखी है, इस प्रकार का अधिगम तीव्र और स्थायी होता है।

छोटे बच्चे बोलना सीखने में दो प्रावस्थाओं से गुजरते हैंः पहली प्रावस्था निष्क्रिय अवस्था है जिसमें बच्चा भाषा का प्रयोग कम करता है और उसे क्या कहा गया है, उसमें से अधिकांश को समझता है। दूसरी प्रावस्था सक्रिय अवस्था है जिसमें बच्चा शब्दों और शब्द समूहों का प्रयोग करना प्रारंभ करता है। इसलिए भाषा सुनकर बच्चा भाषा और भाषा से अपनी दुनिया के बारे में सीखता है। विद्यालय आने के समय तक उसकी भाषा के तरीके अधिकांशतः उसकी मूल भाषा के होते हैं। उसने वह ध्वनि प्रणाली, व्याकरण और शब्दावली सीख ली होती है जो उसके घर और पड़ोस से जुड़ी है। साधारणतया भाषा विकास पर अनुसंधान दर्शाते हैं कि सहयोगशील और सुविधाजनक परिवेश विकास के वर्षों में शब्द भंडार वृद्धि, और विभिन्न प्रकार के अनुभव देता है, जो विद्यालय का काम कर सकने और जो नहीं कर सकने वाले बच्चों के बीच अंतर कर सकता है। अपने प्रारंभिक वर्षों में बच्चा यह समझने में कठिनाई अनुभव करता है कि उसके घर और परिवार के बाहर के लोगों से वह कैसे संबंधित हैं। बच्चे अस्वीकृति की, स्वीकृति की, प्रभुत्व की, समर्पण की, नेतृत्व की, अनुगमन की और समझौते की अपनी युक्तियाँ निर्मित करते हैं।

कक्षाकक्ष के अंदर और बाहर बोली जाने वाली भाषा के प्रयोग करने के अवसर

कक्षाकक्ष में बोली जाने वाली भाषा का प्रयोग करने के प्रचुर अवसर होते हैं। स्वाभाविक अनियोजित चर्चा, वाद–विवाद, मौखिक वार्ता और कविता पाठ के अवसर भी होते हैं। बहुधा विद्यार्थियों के बीच अनौपचारिक वार्ता बहुत रचनात्मक हो सकती है, यदि इस पर ध्यान दिया जाएँ। हम इस प्रकार के कुछ दृष्टांतों पर विचार कर रहे हैं जिन्हें क्रियाकलापों के रूप में लिया जा सकता है। क्या ये बच्चों को पूरी तरह से स्वतंत्र और आरामदायक अनुभव कराने के लिए अधिक महत्वपूर्ण है?

कक्षाकक्ष का वातावरण पूर्णतः सुविधाजनक होना चाहिए। बच्चों में व्यक्तिगत विभिन्नताओं का सम्मान होना चाहिए। बच्चों की तुलना एक दूसरे से नहीं की जानी चाहिए। शर्मीले बच्चों को पूरी कक्षा के सामने बोलने के लिए बाध्य नहीं किया जाना चाहिए। उन्हें सहृदयता से भाग लेने के लिए सहायता की जानी चाहिए। अध्यापकों को यह कहने में थोड़ी सतर्कता बरतनी चाहिए कि "बात मत करो"। बातचीत कक्षाकक्ष में अधिगम का बड़ा माध्यम है और इसे रोकना विचारों, वार्ता और अभिव्यक्ति में प्रवाह विकसित करने के लिए बड़े अवसर छीनना है। अर्थपूर्ण शोर का सौहार्दपूर्ण स्तर बनाए रखने के लिए "बातचीत मत

करो" का अधिक प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए बल्कि सुस्पष्ट नियमों का विकास कर बच्चों को बातचीत करने देना चाहिए।

अब हम उन्हीं तरीके पर विचार करेंगे जिन क्रियाकलापों को बोली जाने वाली भाषा कौशल सुदृढ़ करने के लिए कक्षाकक्ष में प्रयोग कर सकते हैं।

क) शब्दावली विकास के लिए अवसर

सहभागी अनुभव होने से बच्चे समूह के सामने बात करने की कला से परिचित होते हैं। स्वाभाविक सहभागिता बच्चे की भाषा के स्तर के उन क्षेत्रों को रेखांकित करता है, जहाँ बच्चे का शब्द भंडार सुदृढ़ करना आवश्यक है। शब्द भंडार विकास के कुछ विशिष्ट क्रियाकलाप निम्न प्रकार हैं:

- खेलों के द्वारा, जो बच्चों को सामान्य रूप से प्रयोग होने वाले शब्दों की नई संकल्पना अर्जन में सहायता करें। उदाहरण के लिए, ऐसे खेल जो भाषा के विभिन्न भाग जैसे विशेषण, पूर्व सर्ग, क्रिया–विशेषण पर अधिक ध्यान दें। (गेंद को बैग में रखो, बैग के अंदर रखो आदि), शब्द निर्माण, श्रेणी, विषय को चुनना, अनुमान लगना, मूक अभिनय आदि खेल खेले जा सकते हैं।
- बोझिल शब्दों के लिए तथा अधिक सही शब्दों के प्रयोग करने के उद्देश्य से भी पर्यायवाचियों, विलोम, समरूपी, समालेखी, उपसर्ग और प्रत्ययों का प्रयोग करना;
- शब्द क्रीड़ा का प्रयोग करना, जैसे "... का प्रयोग करते हुए मैं अपनी छोटी–छोटी आँखों से जासूसी करता हूँ" या पहेलियाँ बनाना;
- संदर्भ से शब्दों का अर्थ निकालना सीखना;
- नए शब्दों से परिचित होना और उनके अर्थ ज्ञात करना तथा अवसर मिलने पर उनका प्रयोग करना (शब्दकोश प्रयोग करने का कौशल सीखना)
- आम प्रयोग में मुहावरेदार अभिव्यक्तियों की जानकारी होना और प्रतीकात्मक भाषा जैसे उपमा, समरूपता और रूपकों का प्रयोग करना;
- शब्द निर्माण करने के लिए अनुभूति बोध का प्रयोग। पिकनिक या बाहरी अनुभव के बाद अनुभूति बोध के लिए बच्चों द्वारा इस प्रकार वर्णन कराया जा सकता है कि उन्होंने घास या वृक्ष स्पर्श करते समय कैसे अनुभव किया?, कितने प्रकार की गंध उन्होंने अनुभव की? वायु की ध्वनि, जल की ध्वनि से किस प्रकार भिन्न थी?, उन्होंने कौन–कौन सी भिन्न–भिन्न वस्तुएँ देखी? अध्यापक बच्चों के उत्तर देने पर उन्हें और स्पष्टीकरण के लिए प्रेरित करता है।

ख) सृजनात्मक भाषा के लिए अवसर

सृजनात्मक भाषा विकसित करने के लिए कुछ कार्यकलाप निम्नलिखित हैं:

- बच्चों को बोझिल भाषण के दबाव से मुक्त करने तथा सृजनात्मक अनुक्रियाएँ करने के लिए साहित्य का प्रयोग किया जा सकता है। इसमें सामूहिक ज्ञान, ऊँचे स्वर से पढ़ना और कविता के माध्यम से सृजनात्मक नाटक भी शामिल हो सकते हैं। कविताएँ बच्चे में शब्द और अनुभूति उत्पन्न करती है, जिसे कोई अन्य भाषा अभिव्यक्त नहीं कर सकती हैं। अर्थहीन लयबद्ध कविताएँ, चित्रात्मक कविताएँ, कथाशील कविताएँ, शब्द क्रीड़ा और सुधार के प्रचुर अवसर देते हैं। बच्चे कविता पाठ और विद्यमान शैली या संरचना पर आधारित नई कविताएँ सुधारने में रुचि लेते हैं।

- वाक्य रचना जैसे खेल भी प्रभावी होते हैं, जिनमें प्रत्येक बच्चा तब तक शब्द जोड़ता है जब तक वाक्य पूरा नहीं होता है। इसके बाद नया वाक्य प्रारंभ किया जाता है। विलोम शब्दों का प्रयोग करते हुए वाक्यों का विस्तार करना या उन्हें बदलना, वाक्य रचना खेलों के विविध रूप हैं।
- विवरणात्मक शब्दों के लिए परिचित सामग्री देना, बच्चों को अनुभव या अनुभूति का वर्णन करने के लिए ठीक–ठीक और सही शब्दों का प्रयोग करने की स्थिति प्रदान करना। उदाहरण के लिए, कक्षाकक्ष में भिन्न–भिन्न प्रकार की सामग्री लाई जाए, जैसे लकड़ी, बोतल का ढक्कन, रेशम का टुकड़ा, ब्रुश, कार्क और इन को सभी बच्चे एक–दूसरे को दें ताकि प्रत्येक बच्चा उन्हें देख सकें, स्पर्श कर सकें और सूँध सकें। बच्चों को नए और कल्पनात्मक तरीके से उनका वर्णन करने के लिए प्रोत्साहित करें।
- कहानी बनाने के लिए शुरुआती वाक्य दें। प्रत्येक बच्चे को बारी–बारी से वाक्य जोड़ने दें और पूरी कहानी बनाने दें। बच्चों को कल्पनाशील होने के लिए प्रोत्साहित करें, बच्चों को शब्दों द्वारा काल्पनिक प्रतिबिम्बन में सहायता करें। "नाचते हुए पत्ते", "इठलाता हुआ मगरमच्छ", "बलखाते हुए रेंगता कीड़ा" वाक्यांशों का प्रयोग करके शब्दचित्र दर्शाना और यह बताना कि यह कैसे अर्थ को स्पष्ट और रुचिपूर्ण बनाता है। प्रत्येक बच्चे को कोई भी संज्ञा चुनकर, सौंदर्यात्मक विवरणात्मक शब्दों का प्रयोग कर चित्र प्रस्तुत करने को कहें।
- बच्चे ध्वनि शब्द और अर्थहीन शब्द निर्माण में आनंद लेते हैं जैसे SWISH SWASH went the tail of the donkey, or SNIGGELDY SNAG went the tired crocodile. इसे ऐसे खेल में बदला जा सकता है जिसमें एक बच्चा पशु का नाम ले और दूसरा उपयुक्त ध्वनि शब्द दे।

ग) मौखिक सम्प्रेषण और सहभागिता के अवसरः

योजनाबद्ध सामूहिक कार्य या युगल कार्य द्वारा सहयोगशील अधिगम को प्रोत्साहित करें। कुछ कार्य संरचित करें जिससे बच्चों को उस क्रियाकलाप को करने के लिए चर्चा और अपने विचारों और कल्पनाओं को व्यक्त करना आवश्यक हो जाए। छोटे समूहों में भाग लेना और बोलना शर्मीले बच्चों के लिए कम चुनौतीपूर्ण होता है। इस प्रकार की गतिविधियों से बच्चों को अपने विचार मौखिक रूप में व्यक्त करने में आसानी होती है। वे बच्चों को सीखने, सुनने और अन्य बच्चों के विचारों का सम्मान करने में भी सहायक होते हैं। प्रामाणिक और वास्तविक जीवन की परिस्थितियों का प्रयोग करना महत्वपूर्ण है विशेषकर बच्चों के दैनिक जीवन के अनुभवों का। बच्चे ऐसे कार्यकलापों की पहचान करते हैं और वास्तविक चर्चा में सम्मिलित होते हैं। इससे भाषा के स्वैच्छिक प्रवाह में बहुत सहायता मिलती है। उदाहरण के लिए, बच्चों को जोड़ी बनाने के लिए कहें अपने कक्षाकक्ष को रोचक बनाने के लिए तीन विचार दें। बाद में विचारों को साथ में जोड़ा जा सकता है और इनमें से कुछ विचारों को अपनाया जा सकता है। समूहों या जोड़ियों में किए जा सकने वाले कार्यों के लिए अन्य उदाहरण नीचे दिए गए हैं:

- समस्या समाधान या पहेलियों पर काम करना, जिनमें बच्चों को एक–दूसरे से चर्चा करने की आवश्यकता हो।
- कुछ विशेष विषयों पर एक–दूसरे की रुचि ज्ञात करना।
- पसंद और नापसंद पर चर्चा करना और कुछ विषयों पर सहमति बनाना।
- एक दूसरे को पढ़ाना।

- एक प्रारूप के आधार पर एक–दूसरे के बारे में जानकारी प्राप्त करना।
- कहानी, कविता या नाटक बनाने पर साथ काम करना।
- सामूहिक कविता पाठ।
- स्मरण करना।
- निदेश देना और पालन करना।
- कुछ संकेतों या उद्दीपन पर आधारित सुधार तथा भूमिका–अभिनय।
- पाठ्य सामग्री, परियोजना या समूह अनुभव पर आधारित प्रश्नोत्तर सत्र।
- पुस्तक या अनुभव के सहभागिता पर आधारित वार्ता सत्र।
- प्रदर्शन और कथन सत्रः बच्चे कुछ दिखाते हैं और उसके बारे में बताते हैं।
- अनौपचारिक वार्ता सत्र।

प्रतिदिन या प्रति सप्ताह "अनौपचारिक वार्ता समय" के रूप में कुछ समय निर्धारित करें। पूरे सप्ताह संभावित विषय तैयार करें, प्रश्नों और समस्याओं पर नज़र रखें जो विद्यालय में दिन–प्रतिदिन उत्पन्न हुए हैं। इन्हें चर्चा के विषय के रूप में प्रयोग करें। बच्चों को अपने अनुभव के बारे में बात करने के लिए प्रोत्साहित करें। दूसरों को सुनने और प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित करें।

घ) उच्चारण सुधारने के लिए अवसर

बोली जाने वाली भाषा के संपर्क में बच्चों को अपना उच्चारण सुधारने में सहायता मिलती है। कुछ क्षेत्र जिन पर विशेष ध्यान दिया जाना आवश्यक है, निम्नलिखित हैं:

- सही ढंग या गलत ढंग से की गई व्यंजन ध्वनि के बीच अंतर सुनना। ध्वनि के सही ढंग या गलत ढंग बताने के लिए झनकार, कविताओं और कहानियों का प्रयोग करें।
- कुछ विशेष व्यंजनों को शब्दों में और अलग से पहचानना। बच्चों को अक्षरों की उन ध्वनियों को सुनने का अधिक अवसर दें जिन्हें अलग से और शब्दों में गलत उच्चारण किया जा रहा है। जो ध्वनियाँ सबसे अधिक कठिनाई उत्पन्न करती हैं, थ (th), स (s), श (sh), र (r), ल (l) हैं।
- प्रारंभ, मध्य और अंतिम स्थिति में अक्षर ध्वनियों की पहचान करना। यह जाँच करें कि क्या बच्चा तीनों स्थितियों में व्यंजनों और स्वरों का प्रयोग कर सकता है। प्रत्येक बच्चे को प्रारंभ, मध्य और अंतिम स्थितियों में व्यंजनों के लिए एक वस्तु चुनने दें।
- बहुधा भ्रामक ध्वनियों के बीच विभेद करें। उदाहरण के लिए, s-z, th-s, th-f, w-r, l-r, m-n, p-b। इनका अभ्यास करने के लिए खेलों, कविताओं और गीतों का प्रयोग करें तथा उनका सही रूप सुदृढ़ करें।
- लय ताल विकसित करना, बोलते समय लय ताल के समायोजन से और समय समायोजन और समन्वय सीखने में बच्चों की सहायता करने के लिए समूह गान और सामूहिक कविता पाठ का प्रयोग करें। उच्चारण और आवाज सुधारने में सहायता करने के लिए भाषा को लय ताल और नाटकीय अभिनय से जोड़ें।
- ऐसी विधियाँ ज्ञात करना जो भाषा प्रवाह बढ़ाए। देखें कि क्या बोलने की भिन्न–भिन्न विधियाँ, विशेषकर औपचारिक भाषा में प्रवाह का स्तर बढ़ाती है। रिपोर्टिंग की

भिन्न–भिन्न विधियों जैसे वाक्, अनौपचारिक वार्ता सत्र, साक्षात्कार आदि का प्रयोग करें।

- चरित्र–चित्रण के अनुकूल स्वर शैली का प्रयोग करना। एक कहानी के संवादों में किसी एक पात्र के छोटे भाषण को खोजें, जिसे सही स्वर शैली में उच्चारण नहीं किए जाने से गलत समझा जा सकता है। बच्चों को सुनने के लिए कहें और चुनने के लिए कहें कि कौन सी विधि पात्र के लिए अनुकूल है।
- अर्थ के अनुरूप स्वर शैली का प्रयोग करना। पता करें कि क्या बच्चे स्वर शैली, भावभंगिमा और इशारों का परिवर्तन करके एक ही शब्द के विविध अर्थ दिखा सकते हैं?

बोध प्रश्न 5

टिप्पणी : (क) अपने उत्तरों को दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

(ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

1) उन कुछ विधियों की सूची बनाइए जिनमें बोली जाने वाली भाषा के कौशल, कक्षाकक्ष में विकसित हो सकता है।

....

....

....

....

....

अध्यापक की भूमिका

अध्यापक के लिए यह समझने की आवश्यकता है कि बच्चों को मौखिक कौशल में पारंगतता प्राप्त करने में मदद करना, कक्षा को वास्तविक संसार के अधिक निकट लाता है। हम इन कौशलों का प्रतिदिन घर में, विद्यालय में और कार्य में प्रयोग करते हैं। अनुसंधान द्वारा दर्शाया गया है कि मौखिक भाषा मानदंड, पढ़ने के लिए महत्वपूर्ण आधार होते हैं। अध्यापकों के लिए निम्नलिखित अनुभव करना महत्वपूर्ण है:

- मौखिक कौशल बढ़ाने वाले कार्यकलापों की प्रासंगिकता और महत्व अनुभव करना और इस अनुभूति को वास्तविक कक्षाकक्ष अभ्यास में रूपांतरित करना। इस प्रकार प्रत्येक कक्षाकक्ष में चर्चा, रिपोर्टिंग तथा प्रश्नोत्तर सत्रों द्वारा मौखिक भाषा अभ्यास के लिए बहुत से अवसर प्रदान करना चाहिए।
- मौखिक कार्यकलापों के लिए ध्यानपूर्वक समय निर्धारित करना। इन्हें प्रत्येक कक्षा की विशेष आवश्यकताओं और अधिकांश विद्यार्थियों की अधिगम शैलियों को ध्यान में रखकर आयोजित करना आवश्यक है।
- अनुकूल और स्वास्थ्यवर्धक कक्षाकक्ष परिवेश स्थापित करना। इस पर विस्तार से पहले ही चर्चा की गई है।
- शोर का व्यावहारिक स्तर सुनिश्चित करना। इसके लिए बहुत स्पष्ट नियम और सीमाएँ निर्धारित करना महत्वपूर्ण है।

- बच्चों को एक–दूसरे को सुनने और दूसरों के विचार को समझने में सहायता करना, भले ही वे एक–दूसरे से अपने विश्वासों में पूर्णतः विपरीत हों।
- कक्षाकक्ष गतिशीलता के प्रति बहुत संवेदनशील होना और शर्मीले, असुरक्षित बच्चे का अतिरिक्त सहायता की आवश्यकता होने पर, सहायता करना उन अवसरों को दूर करने का प्रयत्न करें जिन पर ऐसे बच्चे को छोटापन महसूस हो सकता है। उन्हें बहुत धीरे–धीरे बाहर निकाले, प्रारंभ में उन्हें छोटे समूहों में भाग लेने दें और धीरे–धीरे जैसे उनका विश्वास निर्मित होता है, उन्हें बड़े समूह में शामिल करें। साथ ही सभी बच्चों की सक्रिय सहभागिता के लिए प्रयत्न करें और इसे सुनिश्चित करें।
- प्रत्येक कार्यकलाप के अंत में, कार्यकलाप पर कार्य करने के अनुभव की चर्चा (कक्षा में) करें।
- विद्यार्थियों के कार्य का मूल्यांकन करते समय सदैव सकारात्मक दृष्टिकोण प्रयोग करें। पहले अच्छी बातों के बारे में बात करें। बच्चे की गलतियाँ ढूँढ़ने की बजाय उसके मजबूत पक्षों के बारे में बात करें और उन पक्षों के बारे में बात करें जिन्हें सुदृढ़ करने की आवश्यकता है। यह उपागम बच्चों की गलतियाँ ढूँढ़ने के स्थान पर उनमें सुधार करने के तरीकें खोजने पर ध्यान केन्द्रित करता है। अपेक्षाएँ अधिक सकारात्मक हो जाती हैं। वास्तव में, प्रत्येक बच्चे को अपने पिछले निष्पादन से प्रतिस्पर्धा करने की अनुमति दें। बच्चों को अपने वास्तविक कार्य निष्पादन का रिकार्ड रखने के लिए कहा जाए (जैसे आलेख) और वे अपनी प्रगति स्वयं देखें। इस प्रकार के अभ्यास का प्रत्यक्ष प्रभाव बच्चों को प्रत्येक बार अधिक अच्छा काम करने के लिए प्रेरित करता है। वे अपने ग्राफ को ऊपर जाता हुआ देखना पसंद करते हैं।
- वास्तविक सुधार या किसी भी सृजनात्मक कार्य की प्रशंसा करने के अवसर कभी नहीं छोड़ें। प्रोत्साहन लम्बे समय तक सीखने और सुधार करने का मार्ग प्रशस्त करता है। साथ ही कभी भी बच्चों की तुलना करने में बहुत सावधानी बरतें। बच्चों के प्रत्येक कार्य को महत्व दें।
- व्यक्तिगत या सामूहिक कार्य की निगरानी करते समय सुधार के लिए विशिष्ट सुझाव दें।
- सावधानी के साथ सुने और जब भी आवश्यकता हो, समर्थन या पुनर्बलन प्रदान करें।
- बच्चों को अभ्यास करने के लिए पर्याप्त अवसर दें।

6.8 भाषा विकास और पठन कौशल

चूँकि भाषा अर्जन स्वाभाविक प्रतीत होती है, इसलिए हम यह भी सोचने लगते हैं कि अन्य कौशल जैसे पढ़ना और लिखना भी बच्चों में स्वाभाविक रूप से आएगा। हम सोचते हैं कि यदि कोई एक भाषा बोल सकता है तब वह स्वतः ही उस भाषा में अच्छी तरह लिख और पढ़ सकता है। परंतु ऐसा नहीं है। यद्यपि, पढ़ने और लिखने का संबंध उसी भाषा से है जो बोलने में प्रयुक्त की जाती है, परंतु इसके अन्य आयाम भी हैं जिनके लिए बोलने से संबद्ध आयामों से बिल्कुल भिन्न प्रत्यक्षीकरण और युक्तियाँ आवश्यक हैं। इन भिन्नताओं की जानकारी यह समझने में हमारी सहायता करेगी कि पढ़ने की क्या विशेषताएँ हैं और उससे उन लक्षणों पर ध्यान देंगे जो हमें दक्षतापूर्वक पठन कौशल अर्जित करने में सक्षम बनाते हैं।

भाषा अर्जन से पठन अर्जन तीन प्रकार से भिन्न है। पहला, पाठक को उस विचार से परिचित होना चाहिए जो मुद्रित भाषा में है, जो कागज पर अंकित नहीं होता है। ऐसा करने के लिए पाठक को मुद्रित कूट को भाषा में रूपांतरित करना चाहिए। दूसरा, यद्यपि भाषा अर्जन के लिए अभिप्रेरण स्वाभाविक है, परंतु जहाँ तक पठन का संबंध है यहाँ ऐसा नहीं है। यह इस बात पर निर्भर करता है कि बच्चा मुद्रित सामग्री से कैसे समझता है, अर्थात् क्या वह इन चिन्हों के भिन्न–भिन्न आकारों में भ्रमित हुए बिना कागज पर अंकित चिन्हों को सही ढंग से विकूटित कर सकता है। परंतु इससे भी अधिक महत्वपूर्ण है कि बच्चे का पठन के लिए अभिप्रेरण बच्चे की व्यक्तिगत, सामाजिक और शैक्षिक रुचियों में मुद्रित शब्दों की भूमिका पर निर्भर करता है। तीसरा, वक्ता और श्रोता के बीच अंतःक्रिया सदा वास्तविक स्थिति में होती है जिसमें वक्ता की अमौखिक क्रियाएँ और तात्कालिक परिवेश कथन के स्पष्टीकरण में सहायता करते हैं। परंतु पठन में पाठक को अर्थ अधिक स्पष्ट करने के लिए ऐसा कोई भाषायी संकेत नहीं मिलता है। इसके अलावा, भाषण के विपरीत पठन में सदा यह माना जाता है कि समझ का अभाव पाठक की समस्या है और लेखक की नहीं।

पठन के प्रारंभिक अनुभव कल्पना करने की, वस्तुओं को जानने और संसार का पता लगाने के लिए बच्चे की इच्छा पर आधारित होने चाहिए। पठन से बच्चों को परिचित होने के लिए सबसे अधिक सरल तरीका उनके द्वारा पढ़ना और पुस्तकों के बारे में उनसे बातें करना है। अगला कदम पढ़े जाने वाले मुद्रित सामग्री को दिखाना है ताकि बच्चे उसे देख सकें और उसे ध्वनि में रूपांतरित कर सुन सकें। जैसे–जैसे बच्चों का भाषा का प्रत्यक्ष ज्ञान बढ़ता है और शब्द पढ़ने के लिए उनकी क्षमता तेजी से बढ़ती है, तब वे स्वयं पढ़ना चाहते हैं और जो उन्हें रूचिकर लगता है, उसे पढ़ते हैं। परंतु इस अवस्था में पहुँचने के लिए अवसर होने चाहिए। अध्यापकों को ऐसे अवसर देने चाहिए और बच्चों को शैक्षिक, सामाजिक और व्यक्तिगत प्रयोजनों के लिए मुद्रित सामग्री का प्रयोग करना सिखाना चाहिए। बहुधा अध यापकों में कक्षाकक्ष में शैक्षिक विषयों के पठन पर ध्यान केन्द्रित करने की प्रवृत्ति होती है। इससे ऐसा प्रतीत होता है कि पठन कुछ अलग कार्य है जो केवल कक्षाकक्ष में ही किया जाता है। इसके स्थान पर बच्चों को यह महसूस होना चाहिए कि पठन व्यक्ति के जीवन से घनिष्ठता से जुड़ा हुआ है और पठन के प्रति वास्तविक झुकाव उन्हें जीवन में सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने में सहायता करेगा।

बोध प्रश्न 6

टिप्पणी : (क) अपने उत्तरों को दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

(ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

1) पठन अर्जन भाषा अर्जन से कैसे भिन्न है?

....

....

....

....

....

....

विद्यालय गमन और पठन विकास

आजकल विभिन्न देशों में साक्षरता स्तर बढ़ाने पर बहुत बल दिया गया है। परिणामस्वरूप विद्यालय के और पठन अनुदेशों पर समाज का दृष्टिकोण बदल गया है तथा पठन, साक्षरता की सबसे अधिक महत्वपूर्ण विशेषता हो गई है। समाज के सभी स्तरों पर माता–पिता अपने बच्चों को शिक्षित होने की आशा करते हैं। वास्तव में, व्यक्ति की पठन योग्यता का प्रदर्श बहुधा उसकी बुद्धिमानी और शिक्षा के चिन्ह के रूप में माना जाता है। इसके फलस्वरूप बिना समझे कागज पर अंकित चिन्हों के तेजी से यांत्रिक पठन को स्वीकृति प्राप्त होने लगी हैं। परंतु आज प्रकार्यात्मक साक्षरता के व्यापक मानक हैं। प्रकार्यात्मक साक्षरता का अभिप्राय सामान्य पाठ्यांश जैसे समाचारपत्र और नियम पुस्तिकाओं को पढ़ने की योग्यता है और इन पाठ्यांशों को समझने के प्रमाण भी देना है। इसलिए अध्यापकों को पूरी तरह समझना चाहिए कि पठन अध्यापन का मुख्य लक्ष्य विद्यार्थियों की इसमें सहायता करना है कि पठन की प्रत्येक अवस्था में मुद्रित सामग्री से अर्थ कैसे निकाला जाता है।

पठन विकास का संबंध पठन निष्पादन में परिवर्तन करने से है और ये परिवर्तन जिसमें बच्चे की संज्ञानात्मक वृद्धि से कैसे सम्बद्ध है जिसमें ज्ञान का अर्जन, संगठन और पुनर्संरचना शामिल है। विश्व और संबंधों का बच्चों का ज्ञान, इसे वे कैसे अर्जित करते हैं और इस ज्ञान का प्रयोग कैसे करते हैं, जिसका उनके पठन कार्य निष्पादन पर प्रभाव होता है। भाषा वृद्धि का संबंध बच्चे की स्वाभाविक भाषा, भाषा प्रयोग और भाषा प्रकार्यों के ज्ञान से है। भाषा वृद्धि और पठन के बीच निश्चित संबंध हैं। यह बधिर बच्चों पर हुए अध्ययनों से स्पष्ट है। बधिर बच्चे उन बच्चों की अपेक्षा पर्याप्त विलम्ब से भाषा अर्जित करते हैं, जो सुन सकते हैं। यह भी पाया गया है कि उनकी पठन वृद्धि भी सामान्य बच्चों की अपेक्षा बहुत मंद है और गुणात्मक रूप में सामान्य बच्चों की अपेक्षा भिन्न है।

पठन अनुदेशों को बच्चे की संज्ञानात्मक और भाषा वृद्धि की अवस्था में ध्यान में रखना चाहिए। पहला, प्रारंभिक विद्यालय के बच्चों द्वारा को प्रदर्शित किए जाने वाले पठन कार्यों और उनकी संज्ञानात्मक या भाषा वृद्धि के बीच बड़ा अंतर है तो उनका पठन बोध घट जाता है। दूसरा, उसी कक्षा के अलग–अलग बच्चों में उनकी संज्ञानात्मक और भाषा वृद्धि में विविधता हो सकती है। इन कारकों के कारण पठन के अध्यापन की मुख्य चुनौतियाँ निम्नलिखित हैं : (1) ऐसा कार्यक्रम बनाना और क्रियान्वित करना चाहिए जो औसत बच्चे की संज्ञानात्मक और भाषा वृद्धि के लिए उपयुक्त हो और यह सुनिश्चित करें कि पठन बोध धीरे–धीरे विकसित किया जा रहा है और (2) प्रभावकारी वैकल्पिक विधियाँ ज्ञात करना जो उन बच्चों की आवश्यकताएँ पूरी करें जिनकी पठन क्षमता अन्य औसत बच्चों से भिन्न है।

जब बच्चा पढ़ना प्रारंभ करता है उसमें कई कौशल अंतर्निहित होते हैं। इनमें सबसे पहला पृष्ठ पर शैलीयुक्त आकार, स्याही चिन्ह, रेखाएँ, बिन्दु, वक्ररेखा, एक समान और भिन्न दिखने वाले वर्ग पहचानने की क्षमता है। और इस प्रकार बच्चा देखकर भेद करता है, छाँटता हैं और वर्गीकृत करता है। जैसे ही पठन कौशल के रूप में विकसित होता है, यह पहलू प्रभावी रूप से यंत्रवत होता है।

तब विद्यार्थी अगले साधारण कौशल पर बढ़ता है, जो कागज पर अंकित चिन्हों को भाषा से जोड़ने की क्षमता है। भाषा पठन का महत्वपूर्ण भाग है। कागज पर चिन्हों और भाषा के भाषायी तत्वों के बीच संबंध विद्यार्थी पर और उस अवस्था पर निर्भर करेगा जिसमें वह है। ये तत्व केवल वर्णमाला के अक्षर, शब्द और शब्दों का समूह, वाक्य, वाक्यांश आदि हो सकते हैं। विद्यार्थी की परिपक्वता पठन की क्षमता निर्धारित करेगी। बच्चे ध्वनि–विज्ञान

विधि द्वारा सीखते हैं, जहाँ शब्दों को स्वनिमिक प्रतीकों में विखंडित किया जाता है और "देखों और कहो" विधि द्वारा भी सीखते है जिसमें शब्द और संभवतः इनसे निरूपित वस्तु का निरंतर अनुभव मिलता है।

अगली अवस्था विशुद्ध बौद्धिक अवस्था है जहाँ विद्यार्थी ध्वनि और शब्द जानता है और शब्द के अर्थ जानने में सक्षम है।

कौशलयुक्त पाठक पढ़ने के दौरान प्रत्येक शब्द और उसी प्रकार प्रत्येक अक्षर में विभेद करना आवश्यक नहीं समझते हैं।

"श्रेष्ठ प्रवीणता वाला पठन एक सहज, तीव्रानुमान का खेल है जिसमें पाठक उपलब्ध भाषा संकेतों को चुनकर, और न्यूनतम मात्रा में उपलब्ध सूचनाओं का प्रयोग कर इसे प्राप्त करता है।" (गुडमैन, 1970, पृ. 25)

वाक्य पढ़ने का प्रयत्न करें:

A m– – was walk– – – d– –n th– s– – – – – t, car– –ing a gr– –n b –g.

भले ही आधे से अधिक अक्षर गायब है परंतु आप किसी कठिनाई के बिना वाक्य पढ़ सकते हैं और किसी अक्षर की सहायता के बिना अंतिम शब्द का अनुमान लगा सकते हैं। आपने यह भी देखा होगा कि जैसे ही आपने दूसरे शब्द का अनुमान लगाया इसने आपको वाक्य के पहले भाग के पूरे का अनुमान लगाने में सहायता की। यह उदाहरण केवल विलगित वाक्य है। यदि आप पाठ में जोड़ गए वाक्यों को पढ़ रहे हैं, प्रत्येक वाक्य आपको यह अनुमान लगाने में सहायता करता है, अगला क्या होगा और इसी प्रकार पूरा पाठ्यांश होता है।

इसलिए पठन सक्रिय प्रक्रिया है। जब हम पढ़ते हैं, हम पाठ के निष्क्रिय प्राप्तकर्त्ता के रूप में केवल बैठे नहीं होते हैं। हम अनुमान लगाने के लिए संसार के और भाषा के अपने स्वयं के ज्ञान से भी मदद लेते हैं।

अच्छे पाठक पाठों से अंतःक्रिया करते हैं, जिसे वे पढ़ते हैं। उन्हें उस बारे में व्यक्तिगत आशाएँ होती हैं कि उन्हें पाठ से क्या प्राप्त करना है और वे उन आशाओं को प्राप्त करने के लिए उन पर निर्भर होते हैं जो वे पढ़ते हैं। वे, वस्तुतः, जो उन्होंने पढ़ा है और जो वह पहले से जानते हैं के बीच संबंध स्थापित करके अर्थ निकालते हैं, या संबंध स्थापित करते हैं। इन अर्थों के निर्माण में वे अपने पिछले ज्ञान और विषय के बारे में अपने विश्व के बारे में ज्ञान से धारणा को इकट्ठा करते हैं और बोलते समय वे उसे विषय से सम्बद्ध करते हैं। पाठकों के पास विषय के बारे में पूर्व जानकारी का नेटवर्क होता है, जिसे सिद्धांतवादी "स्केमा" (Schema) कहते हैं। उदाहरण के लिए, यदि आप छोटे बच्चों को मधुमक्खियों के बारे में पढ़ाने जा रहे हैं तो आप उन्हें प्रश्न पूछ सकते हैं जैसे, "क्या आपने शहद चखा है?" "यह मीठा होता है या कड़वा?" "क्या आपने मधुमक्खी का छत्ता देखा है?" आदि। आपके पूछने के बाद कि वे क्या जानते हैं, आप रानी मधुमक्खी और श्रमिक मधुमक्खियों पर नई जानकारी के ओर बढ़ेंगे।

पठन कौशल विकसित करने में प्रारंभिक अवस्थाएँ

शब्द पहचानने के लिए यहाँ कुछ महत्वपूर्ण सोपान दिए गए हैं जिसे अध्यापक के रूप में आपको समझना आवश्यक है:

- छात्रों को विभिन्न प्रकार के अनुभव प्रदान कर विविध भाषा विकास सुनिश्चित करना। बाजार स्थानों, खरीद केन्द्रों, बगीचों आदि में जाना और इसके बारे में बाते करना, शब्दावली बढ़ाते हुए भाषा वृद्धि में सहायता करता है।

- बच्चों को वस्तुओं का नाम बताकर प्रारंभिक अवस्था में दृश्य शब्दावली विकसित करें।
- खेलों और क्रियाकलापों के माध्यम से बच्चों में दृश्य शब्दों के प्रति अनुक्रिया स्वतः होने दें।
- देखकर भेद करना और प्रत्यक्ष ज्ञान के अवसर सोच समझकर दिए जाने चाहिए ताकि बच्चे अंतरों को पहचान सकें। आप "अन्तर चिन्हित करें" प्रकार के कार्यों से प्रारंभ कर सकते हैं, जिनमें चित्र शामिल हों। बाद में, बच्चों को वर्णमाला के अक्षरों के बीच अंतर करने के लिए कहें।
- बच्चों को दृश्य शब्द अर्जित करने में सहायता करने के लिए दृश्य संकेत दें।
- सावधानीपूर्वक सुनकर ध्वनियों के बीच अंतर करने के लिए अवसर दें।
- सावधानी के साथ दिए गए मौखिक अनुदेश भाषा विकास में सहायता करते हैं।
- श्रवण संबंधी प्रत्यक्ष ज्ञान और विभेदीकरण में पर्याप्त अभ्यास कराएँ।
- नए शब्दों में बाएँ से दाएँ जाने में बच्चों की सहायता करें।
- दृश्य विश्लेषण द्वारा पहचान, शब्द के भागों को जोड़ने से पहले होनी चाहिए।
- ध्वनि–विषयक विश्लेषण करने के लिए बच्चों की कविताओं और खेलों का प्रयोग करें।
- जैसे ही बच्चे शब्दों को मूल, प्रत्यय और उपसर्गों में तोड़ने में प्रगति करते हैं, उनकी सहायता करें।
- बच्चों को बातचीत में शामिल किया जाना चाहिए और उन्हें वाक्यों का प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहित करें।

बच्चों की पठन में सहायता करने के स्वाभाविक तरीके

मुद्रित सामग्री और पाठ का प्रयोग कक्षाकक्ष के दैनिक अनुभव होना चाहिए। निम्नलिखित क्रियाकलाप इस उद्देश्य को पूरा करने के स्वाभाविक तरीके हैं:

- चॉक बोर्ड पर कक्षा के लिए दैनिक संदेश लिखना।
- बच्चों के लिए अध्यापक द्वारा और आपस में एक–दूसरे को चित्र तथा नोट भेजने के लिए कक्षा डॉक बाक्स की व्यवस्था करना।
- फिल्म, अवकाश के दिनों, त्यौहारों आदि पर आधारित शब्दों को चुनकर कमरे में वस्तुओं पर सूचक लगाकर दृश्य शब्दावली पत्रक बनाना।
- टिप्पणियाँ अंकित करने, जन्म दिवस वाले बच्चे का नाम लिखने, विशेष अवकाश आदि लिखने के लिए दीवार पर बड़ा चार्ट या कलैण्डर की व्यवस्था करना।
- भाषा अनुभव कहानियाँ प्रदर्शित करने के लिए रिक्त स्थान की व्यवस्था करना।

बच्चों के लिए प्रतिदिन पढ़ना नितांत आवश्यक है और इसे "सहभागी पुस्तक अनुभव" द्वारा किया जा सकता है। इस दृष्टिकोण में अध्यापक बच्चों द्वारा पढ़ी गई पसंदीदा पुस्तकों का बड़े आकार में पुनरुत्पादन कराता है। जैसे ही अध्यापक पाठ ऊँचे स्वर से पढ़ता है। बच्चे उसे सुनते हैं और शब्द से मुद्रित सामग्री के संबंध का अनुसरण करते हैं। यह उन्हें सामूहिक आधार पर कई पाठ संकेतों से अवगत कराता है। बच्चे भी पुनरुत्पादन का उदाहरण दे सकते हैं और इसलिए वे मुद्रित सामग्री से चर्चा और चर्चा से चित्र पर आते हैं। यह उनमें विस्तृत अनुदेश समझने की शुरुआत है।

किसी भी रूप में प्रारंभिक पठन कार्यक्रम में इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि बच्चे भाषा, मुद्रित सामग्री और पठन के बारे में पहले से ही क्या जानते हैं? यह उनको नई स्वाभाविक जिज्ञासा और रुचि के लिए विचार देता है और उन्हें मुद्रित सामग्री तथा पाठ के विभिन्न आयामों को ज्ञात करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। बच्चों के लिए पठन नैसर्गिक और मजेदार यात्रा होती है, जब वे अपने अनुभवों से और अपनी बोली गई भाषा से मुद्रित सामग्री का गूढ़अर्थ और लेखक के आशय से अर्थ निकालते हैं। प्रारंभिक पठन कार्यक्रम एक अर्थपूर्ण क्रियाकलाप होना चाहिए जो बच्चे का पठन के प्रति सम्मोहन बनाए रखने में सहायता करें।

6.9 भाषा विकास और लेखन कौशल

एक बार जब बच्चा भाषा में मौखिक रूप से सम्प्रेषण करना आरंभ करता है, तब लेखन भी प्रस्तुत किया जा सकता है।

लेखन, हम क्या सोचते हैं, इसकी भौतिक अभिव्यक्ति है। लेखन और चिंतन के बीच निकट संबंध लेखन को महत्वपूर्ण बनाता है। चूँकि छोटे बच्चे इससे संघर्ष करते हैं कि आगे क्या लिखना है या इसे कागज पर कैसे लिखा जाए, वे बहुधा विचार को नए ढंग से व्यक्त करने का नया तरीका खोजते हैं। कभी–कभी वे इसके बारे में पुनः सोचते हैं। इस प्रकार लेखन का बच्चे के मस्तिष्क के अंदर आंतरिक प्रक्रियाओं से निकटता से संबद्ध है, अर्थात् बाह्य अनुभवों का आंतरिक परिचालन। इसके अलावा, लेखन व्याकरण संबंधी संरचना, मुहावरों और शब्दावली को सुदृढ़ करती है जिसे हम अपने बच्चों को पढ़ाते हैं।

बच्चों द्वारा अधिकांश लेखन विकूटित भाषा के रूप में समझा जा सकता है, अर्थात् अनुभवों के आधे–अधूरे चित्र बच्चे के मस्तिष्क में इकट्ठे हो जाते हैं और आंतरिक बोली में रूपांतरित हो जाते हैं। फिर यह एक ग्राफिक रूप में परिवर्तित होता है जो लेखन है। प्रारंभ में बच्चे कई तरीकों से अपना अनुभव और विचार संप्रेषित करते हैं जैसे वार्ता के माध्यम से, क्रियाओं के माध्यम से या चित्रकला के माध्यम से। जैसे–जैसे बच्चा बढ़ता है लेखन, जो परिष्कृत, निरपेक्ष और जटिल प्रतीक प्रणाली है, धीरे–धीरे महत्व प्राप्त करती है।

जैसा कि अभिव्यक्ति के अधिकांश रूपों में होता है, लेखन तब तक विकसित नहीं होगा जब तक यह बच्चों को किसी प्रकार की संतुष्टि नहीं देता है। अधिक महत्वपूर्ण और दीर्घकालिक संतुष्टि किसी व्यक्ति से सम्प्रेषण करने की आवश्यकता से आती है। इसलिए कोई भी अर्थपूर्ण लेखन कार्य वास्तविक श्रोताओं से कुछ बात कहने की आवश्यकता की भावना से जन्म लेता है। कक्षाकक्ष में लेखन विकसित करने के लिए स्वाभाविक अनुकूल तरीके आदि में संप्रेषण के बहुत अवसर होने चाहिए।

यह स्वाभाविक भाषा परिवेश के निर्माण द्वारा होता है जिसमें बच्चे उत्साह से लिखित भाषा के साथ प्रयोग करते हैं जिससे हम बच्चों को सफल लेखक बनाने में सहायता कर सकते हैं। हम अब विचार करेंगे कि अध्यापक ऐसा वातावरण कैसे प्रदान कर सकता है।

द्वितीय भाषा विद्यार्थियों की विशेष आवश्यकताएँ

प्रारंभ में द्विभाषी बच्चों को शाब्दिक मदों के दो समूह अर्जित करते हुए देखा गया है (एक उनकी प्रथम भाषा और दूसरी उनकी द्वितीय भाषा) और एक वाक्य रचना प्रणाली। यह अधिक उन मामलों में देखा गया है जहाँ द्वितीय भाषा स्वाभाविक दशाओं में विकसित की जा रही है। उन बच्चों के लिए जिन्हें द्वितीय भाषा के लिए घर में कोई सहायता नहीं मिलती है, द्वितीय भाषा में प्रकार्यात्मक क्षमता अर्जित करना कठिन होता है। यह स्थिति इस कारण

अधिक गंभीर हो जाती है कि "अंग्रेजी" को अधिक सामाजिक महत्व दिया जाता है। जबकि कुछ बच्चों की पहली भाषा को पिछड़ा समझा जाता है; विशेषकर जब बच्चे अमानक भाषा या बोली प्रयोग करते हैं। ऐसे बच्चों के प्रति अध्यापक का अपना रवैया अधिक महत्वपूर्ण है। बच्चों को अपनी भाषा और संस्कृति की पृष्ठभूमि के प्रति गर्व अनुभव करना चाहिए। इससे स्वीकृति की भावना आती है। जब तक बच्चा द्वितीय भाषा के बारे में आश्वस्त न हो, वह अपनी मातृ भाषा से सहायता लेता है। चूँकि हम बहुसांस्कृतिक कक्षाकक्ष में कार्य करते हैं, इसलिए, यह सुनिश्चित करना अध्यापक के लिए चुनौती है कि सभी बच्चे अपनी मातृभाषा का प्रयोग करने में आश्वस्त हैं, जब कभी आवश्यकता होती है। यह न केवल कक्षाकक्ष का परिवेश समृद्ध बनाता है बल्कि यह बच्चों को ऐसा सुदृढ़ आधार भी प्रदान करता है जहाँ से द्वितीय भाषा प्रारंभ होती है।

अध्यापक को बच्चे की अपनी भाषा और द्वितीय भाषा के बीच बेमेल के संभावित पक्षों के प्रति भी संवेदनशील होना आवश्यक है। उसे भ्रम के क्षेत्रों का पता लगाना चाहिए और इन क्षेत्रों में विशेष औपचारिक अनुदेश देने चाहिए। उदाहरण के लिए, प्रथम भाषा (मातृभाषा) बाधा बहुधा उन बच्चों के वाक्य में क्रिया को गलत स्थान पर रखती है जो हिन्दी भाषी पृष्ठभूमि से आते हैं। इस मामले में अध्यापकों को इस समस्या को हल करने के लिए अतिरिक्त अभ्यास देना चाहिए।

यदि लेखन प्रक्रिया को स्वाभाविक रूप से विकसित करना है तब मातृभाषा प्रयोग की अनुमति तब तक दी जानी चाहिए जब तक बच्चा द्वितीय भाषा में काफी प्रवीणता प्राप्त नहीं कर लेता है। यदि हम बच्चों को मातृभाषा प्रयोग की अनुमति नहीं देते हैं तो हम बच्चे को उसकी अभिव्यक्ति की क्षमता अर्जित करने से रोकते हैं।

स्वाभाविक अधिगम परिवेश का निर्माण

यदि हम स्वाभाविक वातावरण में द्वितीय भाषा अधिगम पर विचार करें तो यह स्पष्ट हो जाता है कि सम्प्रेषण क्षमताओं के विकास की प्रक्रियाएँ तब तक विकसित होती हैं, जब तक वातावरण आवश्यक उद्दीपक और अनुभवों को प्रदान करता है। इसका सबसे महत्वपूर्ण लक्षण यह प्रतीत होता है कि अध्येता को द्वितीय भाषा को वार्तालाप के लिए प्रयोग करना चाहिए। अध्यापक को ऐसे सभी अवसरों का प्रयोग करने का प्रयास करना चाहिए जो कक्षाकक्ष को वास्तविक सम्प्रेषण प्रदान करते हैं। इस तरीके से अध्यापक कक्षाकक्ष के अंदर स्वाभाविक अधिगम परिवेश का उपयोग करता है।

इससे सामान्यतः ऐसा लगता है कि यह समझना महत्वपूर्ण है कि स्वाभाविक भाषा परिवेश बच्चों को विविध प्रयोजनों से विभिन्न प्रकार का लेखों को सीखने के अवसर प्रदान करता है। मोटे तौर पर इन्हें तीन श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है:

कार्य संपादन रूपः यह कथन/लेखन कार्य करवाने से संबंधित है। इसमें सूचना देना, अनुदेशन, टिप्पणी, संदेश देना, नोटिस लिखना और अन्य इसी प्रकार के कार्यकलाप अंतर्निहित हैं जो सलाह देने, प्रोत्साहन देने या अन्यों की सूचना देने का कार्य करते हैं।

भावबोधक रूपः वह भाषा है जो व्यक्तित्व के समीप होती है और व्यक्ति का स्वभाव प्रकट करने के लिए प्रयुक्त की जाती है। यह विचारों और भावनाओं का स्वतंत्र प्रवाह है।

काव्य रूपः इसमें शैली निर्माण के लिए प्रयुक्त भाषा विशेष तरीके से बनाई जाती है। इस रूप में भाषा कला के माध्यम के रूप में प्रयुक्त की जाती है। कक्षाकक्ष में बच्चों के लिए कोई भी निर्धारित लेखन देते समय सभी तीनों रूपों का प्रकटन सुनिश्चित करना चाहिए। अध्यापक को उपयुक्त रूप, शब्दावली या लेखन परंपरा के सुझावों के साथ उन्हें समर्थन देना चाहिए।

अधिकांश विद्यमान प्राथमिक विद्यालयों में इस प्रकार का परिवेश दिखाई नहीं देता है। कक्षाएँ बहुत संरचित और अध्यापक–निदेशित प्रतीत होती हैं। विद्यार्थी–वार्ता और विद्यार्थी अंतःक्रिया न्यूनतम होती है। "शान्त रहो और अध्यापक को सुनो" जैसे कथनों से नियंत्रित व्यवस्था का वातावरण बनता है, जिसमें बच्चा भाषा प्रयोग में स्वतंत्र नहीं होता है, इसलिए अर्थपूर्ण भाषा के प्रयोग के न्यूनतम अवसर होते हैं। लिखित कार्य केवल पाठ्यपुस्तकें और कार्यपुस्तिका अभ्यास, या निर्मित निबंध, अक्षर या अनुच्छेद लेखन तक सीमित होता है। वास्तविक भाषा अधिगम होने के लिए ऐसा वातावरण सृजन करना आवश्यक है, जहाँ बच्चे अर्थपूर्ण तरीके से भाषा को विभिन्न रूपों में प्रयोग करने के लिए स्वतंत्र हो।

अब तक हम कक्षाकक्ष में अनुकूल और स्वास्थ्यप्रद वातावरण बनाने की आवश्यकता पर चर्चा करते रहे हैं ताकि बच्चे स्वतंत्र महसूस कर सकें। अब हम इसे करने के लिए कुछ प्रस्तावित मार्गनिर्देशों पर विचार करेंगे।

कुछ मार्गदर्शन

i) प्राप्तकर्ता श्रोताओं तक अपनी बात पहुँचाने के लिए बच्चों की आवश्यकता के अनुसार हमें लेखन कार्यक्रम और कक्षाकक्ष परिवेश बनाने की आवश्यकता है।

ii) हमें लेखन अधिगम की प्रक्रिया में प्रयोग और जोखिम लेने का महत्व समझना आवश्यक है। ऐसे परिवेश में जहाँ बच्चे गलतियाँ करने पर रोकटोक नहीं होती हैं, वे भाषा को विभिन्न तरीकों में प्रयोग करते हैं। निर्मित वर्तनी, वयस्कों की लेखन की नकल और अपनी स्वयं की आंतरिक प्रेरणा द्वारा बच्चे अपरिचित भाषा क्षेत्र में जाते हैं। उनकी गलतियाँ अध्यापक को उनकी आवश्यकता के अनुरूप औपचारिक अनुदेश देने में सहायता करती है।

iii) हमें यह समझना आवश्यक है कि बच्चे विभिन्न तरीके में और विभिन्न गति से प्रगति करते हैं। प्रत्येक बच्चा अपनी लेखन में अनुभव की समृद्ध पृष्ठभूमि लाता है। चाहे अनुभव घर में साक्षर पृष्ठभूमि द्वारा समर्थित हो या चाहे बच्चा मौखिक परंपरा से आता हो, यह बच्चे के लेखन को प्रभावित करेगा।

iv) हमें नई भाषा से बच्चों के प्रयोग का समर्थन करने की आवश्यकता है जब वे अपने लेखन में आगे बढ़ते हुए परंपरागत दृष्टि से देखते हैं। बच्चों को द्वितीय भाषा के लिखित रूप में प्रयोग करने में सुविधा महसूस करनी चाहिए। उन्हें इससे सम्बद्ध होना चाहिए और गलतियाँ करने के भय के बिना अपने लेखन के बारे में स्वामित्व की भावना महसूस करनी चाहिए। ऐसा करने के लिए प्रत्येक बच्चा ऐसी युक्तियाँ ढूँढ़ता है जो उसे प्रभावशील भाषा उपयोक्ता बनाती हैं। प्रत्येक बार अध्यापक विषय निश्चित करता है, निश्चित तरीके से पूछता है या सही वर्तनी और विरामादि चिन्हों आदि की आशा करता है, तब वह बच्चों को भाषा से प्रयोग करने के अवसर नहीं दे रहा है।

v) बच्चों को द्वितीय भाषा में लेखन के क्षेत्र में धीरे–धीरे से ले जाने की आवश्यकता होती है। चूँकि अधिकांश बच्चे जोखिम लेने और अपरिचित भाषा से प्रयोग करने के लिए अनिच्छुक होते हैं – अध्यापक लेखन क्रियाकलाप निर्धारित करता है जो एक संरचित ढाँचे के अंतर्गत प्रारंभ होता है। धीरे–धीरे बच्चा द्वितीय भाषा शब्दों और वाक्य रचना में प्रवीणता प्राप्त करता है और अधिक खुले संप्रेषण वाले क्रियाकलाप कराए जाने चाहिए। मातृ भाषा का प्रयोग भी करने देना चाहिए और जब धीरे–धीरे बच्चे में आत्मविश्वास आ जाए तो द्वितीय भाषा का प्रयोग धीरे–धीरे बढ़ाना चाहिए।

vi) हमें श्रोता होने के महत्व को स्वीकार करने की आवश्यकता है। बच्चे को वास्तविक श्रोताओं के लिए लिखने की आवश्यकता है – स्वयं अपने लिए, छोटे और बड़े दोनों बच्चों के लिए जिन्हें वे जानते हैं, वयस्कों के लिए और कुछ सामान्य अज्ञात श्रोता के लिए भी।

vii) हमें वे गुण प्रदर्शित करने की आवश्यकता है जो लेखक में होने चाहिए। बच्चों को लेखक बनने में सहायता देने के लिए हमें स्वयं लेखक होकर लेखन प्रक्रिया में सहभागी बनना आवश्यक है। हम उनकी सभी गलतियों में सुधार करके जो कर सकते हैं, उसकी बजाए, उन्हें कार्य में लेखन प्रदर्शन प्रदान कर, सृजन प्रक्रिया में भागीदार बनकर, बच्चों की लेखक बनने में ज्यादा मदद करते हैं।

6.9.1 लेखन की क्रियाविधि

बच्चे विद्यालय जाने से काफी पहले लिखना के बारे में सीखना आरंभ करते हैं। वे अपने आस–पास के बड़ों की नकल करना प्रारंभ कर देते हैं। प्रारंभिक लेखन केवल अभिव्यक्ति है, यह नए रूप में अभिव्यक्त करने का आनंद लेना मात्र ही है। यहाँ कोई वास्तविक श्रोता नहीं है। यह प्रारंभिक लेखन निम्नलिखित अवस्थाओं से गुजरता है:

- आड़ा–टेढ़ा लिखना
- चित्र बनाना
- अक्षरों की मिलती–जुलती आकृतियाँ बनाना।
- लिखने का दिखावा करना (अक्षरों का प्रयोग करना; जैसे आकृतियाँ और आड़ी–तिरछी रेखाएँ)

थोड़ी सी सावधानीपूर्वक यदि देखा जाए तो पता चलेगा कि बड़े बच्चों या वयस्कों की तुलना में छोटे बच्चे अपने हाथ के संचालन में कम कुशल होते हैं। बच्चे के संचालन कम स्थिर, कम सही और कम तीव्र होते हैं। छोटे बच्चे को कई अनुभवों से गुजरना पड़ता है जो उसकी अंगुली का बढ़िया संचालन, आँख–हाथ का समन्वय तथा अन्य दक्षताओं को बढ़ाता है। ये बाद में लेखन कौशल के विकास के आधार का निर्माण करते हैं। यह हस्तलेख–पूर्व अवस्था महत्वपूर्ण है क्योंकि बच्चे कुछ कौशल विकसित करते हैं जो बाद में लेखन कौशल के विकास में सहायता करते हैं। इनमें से बहुतों का पुनर्बलन प्राथमिक अवस्था में क्रियाकलापों के माध्यम से किया जाना आवश्यक है।

हस्तलेख विकास की विशेषताएँ

जब बच्चा सबसे पहले कागज पर कलम या पेंसिल रखता है, वह लेखन प्रक्रिया में अत्यधिक सचेत सहभागिता के साथ यात्रा प्रारंभ करता है। धीरे–धीरे समय और अनुभव के साथ वह स्वतः ही शब्दों और वाक्यों को आकार देने लगता है। प्रारंभ में बच्चे कागज पर एक के बाद एक अक्षर बनाते हैं, इस प्रकार की गति "अभ्यास" कहलाती है।

वैज्ञानिक अध्ययनों ने एक विधि के ऊपर दूसरे की वकालत करने के स्थान पर हस्तलेख की गति की विशेषताओं का वर्णन करने का प्रयास किया है। परंतु उन्होंने दक्ष गति की विशेषताओं पर कुछ प्रकाश डाला है। दो विशेषताएँ जो काम में आती हैं, निम्नलिखित हैं:

1) डाला गये दबाव की मात्रा
2) स्थान का प्रयोग

हस्तलेखन की कुछ परंपराएँ

हस्तलेखन या लेखन शैली अनुदेश में मुख्य समस्या लिखित प्रतीकों को स्पष्ट और दक्ष रूप से प्रस्तुत करना है। यह महत्वपूर्ण है कि हम जब तक हस्तलेखन का कौशल विकसित करते हैं जब लेखन की प्रक्रिया, लेखक के चिन्तन प्रक्रिया के साथ–साथ चलती है। जिस बच्चे को लेखन शैली में कठिनाई होती है, वह लेखन कार्य से बचने लगता है। कुछ महत्वपूर्ण लेखन परंपराएँ जिनका बच्चों को पालन करना आवश्यक है, निम्न प्रकार हैं:

क) **सही ढंग से निर्मित अक्षरः** यह पाया गया है कि कुछ अक्षरों की गलत बनावट से काफी हद तक पढ़ने में अस्पष्टता होती है। ये अक्षर हैं e, n, d, t, r, i, a, h और इ। यह देखने के लिए विशेष प्रयास किए जाने चाहिए कि सभी अक्षरों को ठीक ढंग से बनाया जा रहा है। विद्यालय को अक्षरों की बनावट निर्धारित करना और यह देखना आवश्यक है कि इसमें सुसंगति है विशेष कर f, z, x, g में। यह महत्वपूर्ण है कि सभी अध्यापक इन शब्दों को एक समान बनाएँ।

ख) **अक्षर का आकारः** कक्षा 1 में बड़े आकार के अक्षर पढ़ाना और आने वाली कक्षाओं में धीरे–धीरे उनका आकार घटाना एक परंपरा जैसी है। लाल और हरी रेखाओं की चार रेखाओं वाली अभ्यास पुस्तिका के प्रयोग की सिफारिश की जाती है क्योंकि इससे बच्चों को लम्बे अक्षरों, छोटे अक्षरों तथा उन अक्षरों की भी बनावट में सहायता मिलती है जो नीचे वाली रेखा को स्पर्श करते हैं जैसे ह या ल।

ग) **अक्षरों का झुकावः** अक्षर समान दिशा में झुके होने चाहिए।

घ) **अक्षरों के बीच अंतरालः** अंतराल में सबसे अधिक त्रुटियाँ या तो अधिक पक्तियों के अधिक पास–पास होने के कारण या एक पंक्ति में अधिक शब्दों के एक साथ होने के कारण होती है। इसलिए शब्दों के बीच और पंक्तियों के बीच सही मात्रा में अंतराल होना चाहिए। प्रारंभ में बच्चों को शब्दों के बीच एक अंगुल स्थान छोड़ने के लिए कहा जा सकता है।

ङ) **लेखन स्पष्टताः** अच्छी हस्तलेख की पहली आवश्यक विशेषता स्पष्टता है। यह अलग–अलग अक्षरों की बनावट पर निर्भर करता है। यद्यपि, शब्द तब भी पहचान लिए जाते हैं जबकि कुछ अक्षर पूरे न बने हों। परंतु यदि गलत ढंग से बनाए गए अक्षरों को आदत बन जाने से पहले ही इसकी पहचान कर ली जाए तो उन्हें आसानी से सुधारा जा सकता है।

च) **शब्दों के अंदर अक्षरों का अंतरालनः** बच्चों को यह तथ्य समझना चाहिए कि प्रत्येक अक्षर को शब्द में कुछ स्थान की आवश्यकता होती है ताकि शब्द पढ़ने योग्य हो। कभी–कभी बच्चे एक शब्द में कुछ अक्षरों का झुंड बना देते हैं और दूसरे में अक्षरों के बीच अधिक स्थान छोड़ देते हैं। यह इस तथ्य से भी सम्बद्ध है कि अक्षरों के आकार में भी एकरूपता होनी चाहिए।

छ) **संरेखणः** बच्चों को यह जानकारी होना आवश्यक है कि पंक्तियों के साथ–साथ या पंक्तियों के बीच लिखा जाना चाहिए। उन्हें पृष्ठ के संबंध में प्रत्येक लाइन का झुकाव भी समझना आवश्यक है।

वर्तनी

वर्तनी सीखना एक विकासात्मक प्रक्रिया है। बोलना सीखने की भाँति इसमें भी काफी समय लगता है। वर्तनी के बारे में विशिष्ट दृष्टिकोण है कि इसे वर्तनी पुस्तकों, से रटकर निर्धारित

की गई वर्तनी सूची, या परीक्षण या गलतियाँ सुधार कर याद किया जाता है। अनुसंधान स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं कि बच्चे शब्द सूची से यादकर वर्तनी नहीं सीखते हैं। यह काफी अधिक जटिल प्रक्रिया है। ग्राफिक प्रतीकों, अर्थात वर्णमाला के अक्षरों के प्रयोग से दृश्य रूप में भाषा निरूपित करने में सक्षम होने के लिए बच्चों को लिखित भाषा की आवश्यकता होती है। बच्चे को विभिन्न तरीकों को खोजने की आवश्यकता होती है जिनसे उसकी मातृ भाषा या द्वितीय भाषा में वर्तनी बनती है और वह इन भाषाओं में वर्तनी की समझ विकसित करता है। यह केवल तभी होता है यदि बच्चा भाषा सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से लगा हुआ है। इसका अभिप्राय है कि बच्चे को रूप, प्रारूप, वर्तनी और विरामादि से प्रयोग करने से मुक्त अनुभव होना चाहिए। उन्हें गलतियाँ करनी चाहिए और उन्हें ठीक करना सीखना चाहिए। बच्चों से ठीक, सही भाषा का प्रयोग अपेक्षा उन पर उनको दबाव डालती है और लेखन कार्य ऊबाऊ और कठिन लगने लगता है।

वर्तनी को निष्क्रिय प्रक्रिया नहीं माना जाता है। यह गतिशील और जटिल है। योजनापूर्ण लेखन को वर्तनी सीखने के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है। जैसे–जैसे बच्चा सक्रिय रूप से अधिकारिक अर्थपूर्ण लेखन में लगता है, वह वर्तनी खोजना प्रारंभ करता है। बच्चा जो पहले से जानता है, वर्तनी निर्माण के लिए उसी का प्रयोग करता है। बच्चा शब्दों के बारे में चिन्तन करता है और नए शब्द बनाता है। बच्चा वर्तनी की प्रक्रिया में सक्रिय रूप में सम्मिलित होता है।

वर्तनी शिक्षण के लिए कुछ दिशा–निर्देश

- वर्तनी संपूर्ण पाठ्यचर्या के एक भाग के रूप में पढ़ाएँ। लेखन कक्षा के अलावा अन्य स्थितियों में बच्चों को लिखने और वर्तनी के अवसर दें, जैसेः गणित में या विज्ञान के पाठ।
- बच्चों को बार–बार लिखने को कहें। बच्चे जब लिखते हैं तब वे अपने अर्जित कौशलों से वर्तनी निर्मित करते हैं और उसे परिष्कृत करते हैं। जब बच्चे सूचक, सारिणी, कहानियाँ, गीत या पाक–विधियाँ लिखते हैं, वे स्वतंत्र लेखन द्वारा वर्तनी अभ्यास करते हैं। महत्वपूर्ण बात लेखन कार्य को प्रयोजनमूलक बनाना है।
- कौशल जिसे वे अर्जित करते हैं उसका प्रयोग करते हुए वर्तनी ढूँढ़ते हैं और उन्हें परिष्कृत करते हैं,
- बच्चों को उन शब्दों की वर्तनी निर्माण के लिए प्रोत्साहित करें जिनकी वर्तनी उन्होंने नहीं सीखी हो सकती है। वर्तनी निर्मित करने से बच्चे इस बारे में सोचने लग जाते हैं कि शब्द कैसे ध्वनित होता है और उन ध्वनियों को अक्षरों में ले जाना सीखता है। जैसे वे इस कौशल में प्रगति करते हैं, वे स्वर–सम्मिश्रण जैसे मंए ममए वंए वन आदि शामिल करना प्रारंभ करते हैं। वे व्यंजन सम्मिश्रण, जैसे br, cl, st, आदि पर तथा ऐसे सम्मिश्रणों जैसे th, wh, ch, sh. आदि पर भी विचार करना प्रारंभ करते हैं जो एकल ध्वनि को निरूपित करते हैं। बच्चे ध्वनि के आधार पर शब्द पहचानने के लिए अर्जित कौशल को शब्द लिखते समय दर्शाते हैं।
- शुद्धता, कंठस्थ करने और लेखन शैली पर बल न देना। बच्चे के विकास के स्तर के अनुरूप अपनी अपेक्षाएँ निर्धारित करें और अनुभवहीनता और गलतियों के लिए छूट दें।
- उन तरीकों में बच्चों के लेखन की अनुक्रिया दें जो वर्तनी के बारे में अधिक खोज करने में सहायक हो। अपनी अनुक्रिया से शब्दों में रुचि बनाए, शब्द अध्ययन को मजेदार बनाए, वर्तनी खेल खेलें, वर्तनी के बारे में प्रश्नों का उत्तर दें और वर्तनी कौशल

सिखाए। उन्हें सकारात्मक वर्तनी सजगता विकसित करने में उनकी सहायता करें। कमजोर वर्तनी करने वाले को वर्तनी युक्तियों का व्यापक अनुभव प्रदान करें जिसमें निम्नलिखित सम्मिलित हैं:

- जब शब्दों की गलत वर्तनी होने पर भी सही भाव निकालना सीखने की योग्यता होना;
- प्रारंभकर्ताओं को शब्दकोश प्रयोग करने की योग्यता होना;
- उच्च शब्दों की सूची बनाना जिनकी प्रायः वर्तनी गलत हो जाती है;
- वयस्कों की सहायता लेना;
- वर्तनी निश्चित करने के लिए संदर्भ और अभिप्राय का प्रयोग करने की योग्यता;

निम्नलिखित अभ्यास खराब वर्तनी करने वालों के लिए समस्या उत्पन्न करते हैं:

- बहुत अधिक लाल निशान और संशोधन;
- जब संदर्भ में सहायता नहीं की जाती है, अर्थात लिखित कार्य के संदर्भ या विषयवस्तु पर ध्यान नहीं दिया जाता है, परंतु केवल वर्तनी सही की जाती है।
- जब बच्चे को अर्थपूर्ण लेखन कार्य करने के लिए पर्याप्त अवसर नहीं मिलता है।

वर्तनी के प्रति यह दृष्टिकोण इस सिद्धांत के आधार पर है कि वर्तनी लेखन के लिए है। बच्चे ध्वनि–विषयक अनुसूची या साप्ताहिक वर्तनी परीक्षा पर अधिक अंक प्राप्त कर सकते हैं परंतु बच्चा लिखते समय क्या करता है वही अंतिम परीक्षा है। यदि बच्चा प्रतिदिन लिखता है, अध्यापक विषय के साथ–साथ सप्ताह में एक या दो बार ही वर्तनी पर ध्यान केन्द्रित कर सकता है। परंतु यदि बच्चा सप्ताह में केवल एक बार लिखता है तब वर्तनी अध्यापक का मुख्य केन्द्रबिन्दु होती है। अध्यापक लेखन के लिए अधिक समय देकर बच्चों को सहायता और अपने लेखन के लिए उत्तरदायित्व लेने में सहायता करता है। बच्चों को अपना पहला प्रारूप सुधारने में सहायता करनी चाहिए। पहले प्रारूप को उसके संदर्भ की दृष्टि से देखा जाना चाहिए। वह अंतिम प्रारूप होता है जिसमें वर्तनी पर बल दिया जाना चाहिए क्योंकि अब वह बच्चा श्रोता के साथ अपने लेखन की सहभागिता के लिए उत्सुक है और अपने लेखन का बड़ा पक्षकार है।

वर्तनी निर्माण की विकासात्मक अवस्थाओं में माता–पिता को बच्चों का प्रेक्षण करना आवश्यक है। उन्हें ध्यान रखना चाहिए कि निर्मित वर्तनी खराब वर्तनी आदत निर्माण की ओर से चली जाए। जब बच्चे मानक वर्तनी के बारे में नई जानकारी प्राप्त करते हैं, वे तुरंत अपनी परिकल्पना संशोधित करते हैं और मानक वर्तनी अपनाने में उन्हें कोई कठिनाई नहीं होती है। अंततः वर्तनीकार शब्द की सही वर्तनी निर्धारित करने के लिए दृश्य स्मृति से जानकारी का प्रयोग करता है और स्वनिम, प्रासंगिक तथा अभिप्राय संबंध का भी प्रयोग कर सकता है। परंतु यह प्रक्रिया समय लेती है। वर्तनी के लिए अधिगम का महत्वपूर्ण आधार निर्मित वर्तनी का प्रयोग होता है।

6.10 सारांश

इस इकाई में हमने देखा है कि पढ़ने, लिखने और सीखने में बच्चे के जीवन में सबसे अधिक महत्वपूर्ण वर्ष विद्यालय–पूर्व और प्राथमिक–विद्यालय के वर्ष होते हैं, जिसके अनुभव निर्णय करते हैं कि बच्चा एक अच्छा पाठक या लेखक होगा। हमारे जैसे बहुसांस्कृतिक

समाज में, यह संभव है कि जो बच्चा विद्यालय में प्रवेश करता है उसमें विभिन्न कारणों से उदीयमान पाठक के आवश्यक कौशल नहीं हो। अध्यापक माता–पिता के प्रतिनिधि की भूमिका अदा कर सकता है तथा कक्षाकक्ष में साक्षरता सम्पन्न परिवेश प्रदान कर बच्चे की साक्षरता कौशल विकसित करने के लिए सहायता कर सकता है। यह भी ध्यान रखना आवश्यक है कि केवल बचपन में ही इस प्रकार की साक्षरता का प्रारंभ और अन्त नहीं होता है बल्कि यह जीवन भर जारी रहता है। इस इकाई में, हमने आपको श्रवण, वाचन, पठन और लेखन (LSRW) की अध्यापन अधिगम की प्रक्रिया का सार दिया है।

6.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) उदीयमान पाठक निम्नलिखित कौशल अर्जित कर चुके होंगे जब वे विद्यालय में आते हैं:

- विकसित मौखिक भाषा और विवरणात्मक कौशल
- शब्दावली का अच्छा खजाना
- मुद्रित सामग्री के प्रति जागरूकता और अभिप्रेरण
- ध्वनि–विषयक जागरूकता और ध्वनि–विज्ञान जागरूकता
- कहानियाँ समझने, सोचने और चर्चा करने की क्षमता
- पर्यावरण में मुद्रण समझने की क्षमता
- निर्मित वर्तनी
- संख्या ज्ञान

2) गृह या विद्यालय परिवेश, जो निम्नलिखित का अवसर देता है:

- बच्चों के आसपास मुद्रित सामग्री को देखना और समझना
- पुस्तकें, पत्रपत्रिकाएँ, चित्रों और उनके बारे में बात करना
- पुस्तकें रखना
- कहानियाँ सुनना, चित्र देखना और उन पर चर्चा करना
- लयबद्ध गान
- विभिन्न क्रियाकलापों द्वारा विभिन्न रूप में भाषा की ध्वनियों का प्रयोग
- विभिन्न विषयों पर सुनना और उनके बारे में बातें करना
- मजेदार कार्यकलाप जो बच्चे को भाषा का जानकार बनाते हैं।

3) भिन्न–भिन्न तरीके, जिनमें विद्यालय–पूर्व बच्चा मौखिक और वर्णनात्मक कौशल विकसित करता है, निम्नलिखित हैं:

- दैनिक बातचीत से
- घर में या घर के बाहर की वस्तुओं के बारे में बात करते हुए वयस्कों को देखना और सुनना

- कहानियाँ सुनना और उन्हें कहना
- परिवेश में वस्तुओं के बारे में बातें करना
- आस–पास के वयस्कों की बातें सुनना
- देखभाल पूर्व परिवेश से अंतःक्रिया और सम्बद्ध होना

4) बच्चा तब शब्दावली अर्जित करता है, जब माता–पिता इसका प्रयोग करते हैं:

- बच्चे से लगातार बातें करते हैं और स्थिति जैसे दिन–प्रतिदिन के कार्यों से संबंधित शब्दावली प्रयोग करते हैं।
- परिवेश में वस्तुओं पर संकेत करना, उनका नाम बताना, तथा उनके बारे में बातें करना।
- ऊँचे स्वर से पढ़ते हुए पुस्तक में चित्रों पर संकेत करना।
- कहानी और अन्य पुस्तकों को ऊँचे स्वर में पढ़ना।
- ऊँचे स्वर से पढ़ते समय शब्दों को इंगित करना।
- बच्चे के प्रश्नों का उत्तर देना।
- उस साहित्य का प्रयोग करना जिसमें अनुमान लगाने योग्य पाठ और पुनरावृत्ति हो।

5) जब माता–पिता बड़े चित्र वाली पुस्तकों से ऊँचे स्तर में पढ़ते हैं, शब्दों और चित्रों पर संकेत करते हैं, जब वह पढ़ता है:

- बच्चा मुद्रित सामग्री और चित्रों को देखता है और मूल बाते को समझने की कोशिश करता है।
- बच्चा पुनरावृत्ति पठन में कहानी पर आधारित अधिक संकल्पनाएँ खोजता है।
- बच्चा वस्तुओं, पात्रों या परिस्थिति के बारे में प्रश्न पूछता है और तर्कसगत उत्तर दिए जाते हैं।
- बच्चा पुस्तक संभालना सीखता है और मुद्रित सामग्री तथा विचारों के प्रवाह के बारे में संकल्पनाएँ प्राप्त करता है।
- बच्चा सीखता है कि शब्द विचारों को प्रस्तुत करने के लिए प्रयुक्त किए जाते हैं।

6) ध्वनि–विषयकों और ध्वनि–विज्ञान का ज्ञान निम्नलिखित तरीकों में भाषा कौशल विकसित करने में बच्चे की सहायता करता है:

- बच्चा सीखता है कि भाषा उन शब्दों से बनी हुई है, जो विचारों को निरूपित करते हैं और इसके विपरीत शब्द अलग–अलग ध्वनियों से बने हैं जो विभिन्न तरीकों में संयोजित की गई हैं।
- बच्चा अपनी स्वयं की भाषा का शब्द ध्वनि संबंध समझता है।
- बच्चा ध्वनियाँ पहचान सकता है और सफलतापूर्वक ध्वनि खेल करता है (ध्वनियों को प्रतिस्थापित कर, ध्वनियों को जोड़कर, ध्वनियों को विलोपकर और बाद में शब्द की ध्वनियाँ विखंडित कर)।

- ये कौशल उपयोगी हैं जब बच्चे को शब्द विकूटन करना होता है।
- ध्वनि–विषयक जागरूकता से पठन आसान होता है।

बोध प्रश्न 2

1) नवजात के माता–पिता को निम्नलिखित करना आवश्यक है:
   - बातचीत में लगाएँ।
   - भाषा सुनने का अवसर दें।
   - बच्चे के इर्द–गिर्द चित्र, पुस्तकें, खेल और खिलौने रखें।
   - बच्चे के लिए ऊँचे स्वर में पढ़ें और कहानियों के बारे में बात करें।
   - पुस्तकों में शब्दों और चित्रों पर संकेत करें और उनके बारे में बात करें।
   - बच्चों के शब्दखेल या शब्द खेल वाले गाने, लयबद्ध कविताएँ और संकेतों में लगाना।
   - बच्चों को बाहर ले जाएँ और वातावरण में उपलब्ध मुद्रित सामग्री की ओर इंगित करें और उनसे उसके बारे में बात करें।
   - सम्मान के साथ बच्चे के प्रश्नों का उत्तर दें।
2) वे लक्षण, जो निर्दिष्ट करते हैं कि बच्चे को पढ़ने, लिखने और याद करने में कठिनाई होने की संभावना है, निम्नलिखित हो सकते हैं:
   - पढ़ने के लिए निम्न अभिप्रेरण।
   - निम्न अक्षर ज्ञान।
   - ध्वनि आधारित खेलों की अक्षमता।
   - पुस्तकों और कहानी सुनने में रुचि का अभाव।
   - निम्न सामाजिक कौशल।
   - परिवेश में मुद्रित सामग्री के प्रति कम जागरूकता।
3) विद्यालय के प्रारंभिक वर्षों में बच्चों की उदीयमान साक्षरता बढ़ाने के लिए अध्यापक निम्नलिखित कर सकता है:
   - कक्षा परिवेश को विभिन्न प्रकार के साहित्य से साक्षरता सम्पन्न बनाए।
   - कक्षाकक्ष दीवारों पर मुद्रण करें और चित्र लगाए।
   - बच्चों को ध्वनि अक्षर खेलों पर लगाए।
   - उन्हें लयबद्ध गान और अंगुली के खेल में लगाए।
   - पुस्तकों से कहानियाँ ऊँचे स्वर में पढ़ें और कहानियों पर चर्चा करें।
   - बच्चों को पुस्तकें संभालने दें।
   - साक्षरता प्रदान करने में माता–पिता का मार्गदर्शन करें।
   - कक्षाकक्ष को बच्चे को आकर्षित करने के लिए सक्रिय और मजेदार बनाए।

बोध प्रश्न 3

1) ऐसे कई अवसर होते हैं जब अच्छा श्रोता होना कठिन होता है। जब वक्ता अरुचिकर हो या दर्शक अशांत हों और शोरगुल कर रहे हों, तब एकाग्र होना कठिन होता है। निम्नलिखित मार्गदर्शन अच्छा श्रोता बनाने में सहायक हो सकते हैं:

- आराम से बैठें, जहाँ आप साफ–साफ सुन सकते हैं और वक्ता को देख सकते हैं।
- अपने आपको विचलित न होने दें।
- आप सुनने के प्रयोजन के बारे में स्पष्ट हो।
- पहले मुख्य विचार सुनें और तब सहायक विचार।
- सोचे, कोशिश करें और समझें, वक्ता जब बोल रहा है और आप सुन रहे हैं।
- बाधा न डालें। बाद में पूछने के लिए प्रश्न अंकित करें।
- यदि यह सतत भाषण है तो महत्वपूर्ण बिन्दु लिख लें।

बोध प्रश्न 4

चूँकि यह अनुमान लगाया गया है कि बच्चे कक्षा के समय का कम से कम 50 प्रतिशत समय सुनने में लगाते हैं, जिसमें श्रवण एक सीखे गए कौशल के रूप में अधिक स्पष्ट, प्रणालीबद्ध रूप से ध्यान देना उचित प्रतीत होता है। शिक्षाविदों ने यह अनुभव करना प्रारंभ किया कि श्रवण सभी विद्यालय जाने वाले बच्चों में विकसित किया जाना चाहिए क्योंकि यह अधिगम का महत्वपूर्ण साधन है। विद्यालयों में श्रवण क्षमता विकसित करने का पहला कदम उसका महत्व और अधिगम में उसकी व्यापकता स्वीकार करना है। श्रवण कौशल उन तरीकों में अधिक ध्यान के माध्यम से विकसित किए जा सकते हैं जिनमें बच्चे मौखिक रूप में भाग लेते हैं और वे तरीके जिनसे वे प्रस्तुत की गई नई जानकारी समझते हैं। हमें यह जानना भी आवश्यक है कि वे जानकारी को कैसे याद रखते हैं और वक्ताओं से अनुक्रिया कैसे करते हैं? ये कौशल विद्यालय पाठ्यचर्या के माध्यम से प्रणालीबद्ध रूप से और अविच्छिन्न ढंग से विकसित हो सकते हैं जो दृश्य श्रव्य माध्यम से साथ ही साथ निर्मित वाचन और श्रवण कार्यों में भाषा के प्रयोग करने पर बल देते हैं।

बोध प्रश्न 5

मौखिक भाषा कौशल के विकास के लिए कक्षा, अनौपचारिक रूप से या विशेष रूप से योजनाबद्ध क्रियाकलाप के माध्यम से अंतहीन अवसर प्रदान करती है। कक्षाकक्ष में सुनने और बोलने के अवसर बच्चों को देने का महत्व समझना अध्यापक का कार्य है। एक बार जब अध्यापक इसका महत्व अनुभव करता है उसे उस प्रत्येक अवसर का प्रयोग करना चाहिए जो उत्पन्न होते हैं। कुछ क्रियाकलापों को सावधानी के साथ योजनाबद्ध करना और पाठ्यचर्या में एकीकृत करना आवश्यक हो सकता है जो निम्नलिखित हो सकते हैं:

क) खेलों, पहेलियों, पढ़ने के बाद अनुवर्ती क्रियाकलाप आदि के माध्यम से शब्द भंडार विकास के लिए अवसर।

ख) सृजनात्मक भाषण जैसे नाटकीकरण, सुधारीकरण, चर्चा, रिपोर्टिंग सत्र, वाद–विवाद, कहानी रचना, कविता गीत रचना, कविता पाठ के लिए अवसर।

ग) योजनाबद्ध सामूहिक कार्य या युगल कार्य द्वारा मौखिक सम्प्रेषण के अवसर। इसमें पहेलियाँ, समस्या–समाधान, अभ्यास, चर्चा, अनुभवसहभागिता, देखो और संवाद करो, अनौपचारिक बातचीत, सूचना संग्रह आदि जैसे क्रियाकलाप शामिल हो सकते हैं।

घ) उच्चारण, स्वर शैली और निरूपण के लिए अवसर। ये मुख्यतया गहन श्रवण अनुभवों के रूप में होने चाहिए जिसमें बच्चा अंग्रेजी की संभाषण विधियाँ सुनता है अनुभव करता है और इन्हें अभ्यास करने के लिए उसे अवसर दिया जाता है। इन क्रियाकलापों में नियंत्रित कविता पाठ, या ऊँचे स्वर से पठन सत्र के साथ–साथ गलत उच्चारण होने वाले विशेष व्यंजनों का सही उच्चारण सुदृढ़ करने के लिए विशेष क्रियाकलाप भी शामिल हो सकते हैं।

बोध प्रश्न 6

भाषा अर्जन से पठन अर्जन तीन प्रकार से भिन्न है। पहला, पाठक को उस विचार से परिचित होना चाहिए जो मुद्रित भाषा में है, जो कागज पर अंकित नहीं होता है। ऐसा करने के लिए पाठक को मुद्रित कूट को भाषा में रूपांतरित करना चाहिए। दूसरा, यद्यपि भाषा अर्जन के लिए अभिप्रेरण स्वाभाविक है, परंतु जहाँ तक पठन का संबंध है यहाँ ऐसा नहीं है। यह इस बात पर निर्भर करता है कि बच्चा मुद्रित सामग्री से कैसे समझता है, अर्थात् क्या वह इन चिन्हों के भिन्न–भिन्न आकारों में भ्रमित हुए बिना कागज पर अंकित चिन्हों को सही ढंग से विकूटित कर सकता है। परंतु इससे भी अधिक महत्वपूर्ण है कि बच्चे का पठन के लिए अभिप्रेरण बच्चे की व्यक्तिगत, सामाजिक और शैक्षिक रुचियों में मुद्रित शब्दों की भूमिका पर निर्भर करता है। तीसरा, वक्ता और श्रोता के बीच अंतःक्रिया सदा वास्तविक स्थिति में होती है जिसमें वक्ता की अमौखिक क्रियाएँ और तात्कालिक परिवेश कथन के स्पष्टीकरण में सहायता करते हैं। परंतु पठन में पाठक को अर्थ अधिक स्पष्ट करने के लिए ऐसा कोई भाषायी संकेत नहीं मिलता है। इसके अलावा, भाषण के विपरीत पठन में सदा यह माना जाता है कि समझ का अभाव पाठक की समस्या है और लेखक की नहीं।

6.13 अन्य उपयोगी पुस्तकें

केमेरॉन, एल., 2001. रूटीन्स, नैरेटि्व्स एंड डिसकोर्स, टीचिंग लैंग्वेज्ज टू यंग लर्नस, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।

चोम्स्की, सी. 1971. “राइट नॉउ, रीड लेटर”, चाइल्डहुड एजुकेशन, 47ः 296–299

क्ले, एम. 1996. “इमरजेंट रीडिंग बिहेवियर” पीएच.डी. शोध, यूनिवर्सिटी ऑफ ऑकलैंड, न्यूजीलैंड

मेशन, एम. एवं सिन्हा, जे. 2007, टैक्निकल रिपोर्ट नं.561, इमरजेंट लिटरेसी इन द अर्ली चाइल्डहुड इयर्सः ए प्लाइंग व्योगोत्सकियन मॉडल ऑफ लर्निंग एंड डेवलपमेंट, यूनिवर्सिटी ऑफ इल्नॉइस।

मॉवेट, एम., 1999, मेरी क्लेज् रीडिंग रिकवरीः ए क्रिटिकल रिव्यू, शोध प्रबंध, यूनिवर्सिटी ऑफ मेरीटोबा।

रॉथ, एफ. पी. एवं पॉल, डी. आर., पिरोट्टी, ए. 2006, लेट्स टॉक फॉर पीपल विद स्पेशल कम्यूनिकेशन नीड्स, अमेरिकन स्पीच–लैंग्वेज़–हियरिंग एसोसियेशन।

टील. डब्ल्यू एवं सुल्जवे, ई. (संपा.) 1986, इमरजेंट लिटरेसी : राइटिंग एंड रीडिंग, नॉरवुड, न्यूजीलैंड, एवलैंक्स।

कुछ इंटरनेट वेबसाइट्स

http://stayathomeeducator.com/encouraging-emergent-literacy

http://www.asha.org/public/speech/emergent-literacy.htm

www.ncrel.org/sdrs/areas/issues/content/cntareas/reading/li100.htm